www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय – पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक – प्रो. दामोदर शास्त्री

RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 14, Issue: 1, Jan-June, 2022

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

अनुशास्ता का संस्थान में पदार्पण
06

केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल कुलाधिपति मनोनीत
12

32वां स्थापना दिवस समारोह आयोजित
14

कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ बने NAAC Peer Team चेयरमैन
17

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग के अध्यक्ष का सम्मान
22

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) India

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit.
Ph.D.
M.Phil.
M.A./
M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Yoga and Science of Living

Regular and Distance Education

- M.S.W., English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association in North America
- Asia Education Summit & Awards 2018 for achieving "Best Deemed University in Rajasthan"
- Ranked 10th in Top-25 Private/Deemed Universities in India-2019 by Higher Education Review
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- Smart Classrooms
- Rich Placements
- Air Conditioned Auditorium
- Wi-Fi Campus
- Hostel/Mess Facility
- More than 15 Labs

For more detail please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

अनासक्ति से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया— **अप्पडिबद्धयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ?** भंते! अप्रतिबद्धता से जीव क्या प्राप्त करता है? समाधान दिया गया- **अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ। निस्संगत्तेणं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिया य राओ य असज्जमाणे अप्पडिबद्धे यावि विहरइ।** अप्रतिबद्धता से वह असंगता को प्राप्त हो जाता है। असंगता के द्वारा जीव अकेला, एकाग्रचित्तवाला, दिन और रात बाह्य संसर्गों को छोड़ता हुआ अप्रतिबद्ध होकर विहार करता है।

आदमी के जीवन में कहीं-कहीं प्रतिबद्धता है, आसक्ति है। आसक्ति बन्धन है और अनासक्ति मुक्ति है। व्यक्ति की शरीर के प्रति प्रतिबद्धता और आसक्ति रहती है। क्योंकि सबसे निकट शरीर होता है। साधक यह चिन्तन करे कि मेरा शरीर के प्रति ज्यादा मूर्च्छा का भाव न रहे, ज्यादा आसक्ति का भाव न रहे। वह अन्यत्व भावना का विकास करे अर्थात् मैं (आत्मा) अलग हूं और शरीर अलग है।

हमें ज्यादा ध्यान आत्मा पर देना चाहिए। शरीर की भी सार संभाल की जा सकती है। क्योंकि शरीर से हमारा स्वार्थ सिद्ध होता है। **शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्** शरीर धर्म की साधना का मुख्य साधन है। साधना करनी है तो शरीर को टिकाए रखना होगा। यदि शरीर को टिकाए रखना है तो इसकी देखभाल भी करनी होगी। इसे भोजन भी देना होगा, सर्दी-गर्मी आदि से भी इसकी अपेक्षित सुरक्षा करनी होगी। शरीर की सार-संभाल तो की जा सकती है किन्तु उस पर मोह न रहे, आसक्ति का भाव न रहे। साधक सहनशीलता का अभ्यास करे और यह चिन्तन करे कि शरीर में कभी कुछ कठिनाई भी पैदा हो सकती है, मैं उसे सहन करूंगा।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

01. शैक्षणिक-नैतिक व जीवनोपयोगी क्षेत्र में जैन विश्वभारती संस्थान के सतत अग्रसर बढते कदम 05

अनुशास्ता पढ़ार्पण

01. शिक्षा से अधिक सार्थक है संस्कार युक्त शिक्षा-आचार्यश्री महाश्रमण 06
02. आचार्यश्री महाश्रमणजी के बहुआयामी कर्तृत्व पर आधारित पुस्तक का विमोचन 08
03. केंद्रीय पुस्तकालय ग्रंथागार का भ्रमण 09
04. आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग का अवलोकन 10
05. पुरुष, पुस्तक एवं पंथ से प्रतिष्ठित है भारत भूमि- अनुशास्ता 11

विशिष्ट आयोजन

01. केन्द्रीय श्री मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का कुलाधिपति बनने पर समारोह पूर्वक सम्मान 12
02. 32वाँ स्थापना दिवस 14

विविध

01. अहमदाबाद व मेहसाणा के शंकुस नेचुरल हेल्थ सेंटर का अवलोकन 16
02. कुलपति का चैन्नई में तेरापंथ समाज द्वारा सम्मान 16
03. राष्ट्रीय मूल्यांकन समिति ने बनाया प्रो. दूगड़ को नेक पीयर टीम का चैयरमेन 17
04. अहिंसा का सिद्धांत सबसे उपयोगी-कुलाधिपति 18
05. जैन विश्वकोश के लिए शोध कर रहे आईपीएस उदयसहाय का स्वागत 18
06. कुलपति ने किया जिलाधीश का सम्मान 18
07. फिजियोथैरेपी सहित विभिन्न नये कोर्स शुरू किये जाने की घोषणा 19
08. आचार्य महाप्रज्ञ के 13वें महाप्रयास दिवस पर कार्यक्रम 20
09. अगर महावीर को नहीं चुना तो महाविनाश निश्चित है-प्रो. दूगड़ 21
10. 'विकास : महात्मा गांधी व आचार्य महाप्रज्ञ दृष्टि' पुस्तक का विमोचन 21
11. हमेशा बड़ा सोचें, पहले सोचें और सोचने के बाद निरंतर प्रयास करें - कुलपति 22
12. राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग के अध्यक्ष का दौरान 22
13. विश्व योग दिवस पर सामुहिक योगाभ्यास 23
14. नौ दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला आयोजित 24
15. बुद्ध पूर्णिमा कार्यक्रम का आयोजन 24

जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग

01. 'आधुनिक युग में श्रावकाचार' पर व्याख्यान 25
02. अपरिग्रह के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर व्याख्यान 25
03. आचार्य तुलसी श्रुत संवर्द्धिनी व्याख्यान माला आयोजित 25

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

01. 'भारत गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' व्याख्यान माला में विद्वानों की प्रस्तुतियां 26

शिक्षा विभाग

01. मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन 28
02. ईयर ऑफ मिलेट्स पर सेमिनार का आयोजन 28
03. फ्रेशर पार्टी में नृत्य, गीत प्रतियोगिताओं का आयोजन 29
04. आचार्य महाश्रमण रचित पुस्तक 'सुखी बनो' की समीक्षा 30
05. खेल-कूद गतिविधियां आयोजित 31

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

01. स्वागत महोत्सव में किया नवागन्तुक छात्राओं का स्वागत 32
02. 'बैंकिंग क्षेत्र में नौकरियों की संभावनाएँ' पर कार्यशाला 32
03. पोस्टर-प्रतियोगिता में राधिका चौहान प्रथम रही 32
04. फेयरवेल पार्टी का आयोजन 33
05. 'विभिन्न दर्शनों में सद्गुण' पर व्याख्यान 33
06. राष्ट्रीय युवा संसद का आयोजन 34
07. अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार में पत्र वाचन 34
08. वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी को मिला प्रथम पुरस्कार 34
09. रोजगार परामर्श केन्द्र में प्रतियोगी परीक्षाओं के संदर्भ में व्याख्यान आयोजित 35
10. व्यापारिक कानूनों पर छात्राओं ने दिया प्रजेटेंशन 35
11. 'नवीनतम कर व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण विश्लेषण' पर व्याख्यान 36
12. भारतीय संविधान के दार्शनिक आधार पर व्याख्यान 36
13. राजस्थान दिवस/पृथ्वी दिवस / शहीद दिवस 37
14. बसंत पंचमी/डॉ. अम्बेडकर जयंती 38

आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम

01. कविता पाठ/मेहंदी/एकल गायन प्रतियोगिता, 39
02. शहीद दिवस/विश्व महिला दिवस/ सूर्य नमस्कार कार्यक्रम 39

साईबर सुरक्षा कार्यक्रम

01. निबंध प्रतियोगिता/सुरक्षात्मक उपायों पर कार्यशाला/ वाद-विवाद प्रतियोगिता 40
02. पोस्टर प्रतियोगिता 41

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

01. पृथ्वी दिवस पर रैली निकाली 41
02. पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित 41

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

01. समूह गायन एवं एकल गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन 42
02. सामान्य योग क्रमाचार अभ्यास पर वेबिनार 42
03. तृतीय राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव में स्मृति व सुनीता चयनित 43
04. स्वच्छता जागरूकता रैली व प्रतियोगिताएं 43
05. एक दिवसीय शिविर में व्याख्यान/एक दिवसीय विशेष शिविर आयोजित 43
06. कहानी लेखन प्रतियोगिता/विश्व साईकिल दिवस रैली 44

खेल-कूद प्रतियोगिता

01. राष्ट्रीय युवा दिवस पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन 45
02. खेलों से मांसपेशियों के सुगठन के साथ प्रसन्नता व ताजगी आती है-कुलपति 45

सांस्कृतिक कार्यक्रम

01. एक भारत श्रेष्ठ भारत सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं 46
02. एकल गीत प्रतियोगिता 46
03. सामूहिक लोक नृत्य प्रतियोगिता/मातृ भाषा पोस्टर 47
03. बेकार सामग्री से उपयोगी प्रोजेक्ट बनाने की प्रतियोगिता 47

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-14, अंक- 1
जनवरी-जून, 2022

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री
अच्युतकान्त जैन

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110, 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

शैक्षणिक-नैतिक व जीवनोपयोगी क्षेत्र में जैन विश्वभारती संस्थान के सतत अग्रसर बढते कदम

जब ज्ञान सदाचरण में प्रतिफलित होता है, तब वह सार्थक होता है, अन्यथा वह सारहीन है। यही भाव 'णाणस्स सारमायारो' उक्ति में अन्तर्हित है। जैन विश्व भारती संस्थान ने इसी उक्ति को अपना ध्येय-वाक्य (Moto) स्वीकारा है और सदाचारपरक व नैतिक मूल्यपरक शिक्षा के प्रचार-प्रसार कार्य में वह निरन्तर अग्रसर हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के कारण, यह संस्थान देश में ही नहीं, विदेशों में भी अपनी ख्याति अर्जित कर रहा है।

उल्लेखनीय है कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय प्रत्यायन एवं मूल्यांकन परिषद् (नैक) के विशेषज्ञ-दल द्वारा इस संस्थान की बहुआयामी गतिविधियों का सम्यक् निरीक्षण कर, इसे उच्च 'ए' ग्रेड प्रदान की गई है। इस प्रकार, यह संस्थान जैन विद्या व तुलनात्मक दर्शन, प्राकृत-संस्कृत आदि प्राच्यभाषाएं, योग व जीवनविज्ञान, अहिंसा-विश्वशान्ति व गांधी दर्शन आदि विविध शैक्षणिक विभागों के द्वारा की जा रही बहुआयामी गतिविधियों के कारण अपने क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में परिगणित हो गया है।

इस संस्थान के प्रतिष्ठित 'शिक्षा विभाग' से बी-एड्, एम. एड् आदि उपाधियां हासिल कर विद्यार्थीगण उच्च शिक्षा-संस्थानों में कार्यरत हो रहे हैं। इस संस्थान के परिसर में स्थित 'आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय' महिला शिक्षा का एक विख्यात स्नातक स्तरीय संस्थान है, जो महिला शिक्षा क्षेत्र में निरन्तर ऊँचाइयों को छू रहा है। इन सब विभागों द्वारा की जाने वाली शैक्षणिक व सहशैक्षणिक आदि विविध गतिविधियों को 'संवाहित' (प्रसारित) करने वाली 'संवाहिनी' (षाण्मासिकी) पत्रिका का नवीनतम अंक (जनवरी-जून-2022) पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

इस संस्थान का सौभाग्य रहा है कि तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य का 'अनुशास्ता' के रूप में संस्थान को धार्मिक-आध्यात्मिक मार्गनिर्देशन प्राप्त होता रहा है। वर्तमान अनुशास्ता श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमण ने गत दिनों, इस संस्थान के सभी विभागों का निरीक्षण किया और छात्रों व अध्यापकों को उद्बोधित किया। उनकी सत्प्रेरणा से संस्थान-परिसर में 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल कालेज एण्ड हास्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग' की संस्थापना का कार्य प्रगति पर है और यथाशीघ्र, उसका बृहद् जनोपयोगी स्वरूप विकसित होकर सामने आएगा।

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल (पूर्व आई.ए.एस.) को जैन विश्वभारती संस्थान के कुलाधिपति पद पर नियुक्त किया गया है। इस नियुक्ति से यह विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ है। उनके निर्देशन में निश्चित रूप से संस्थान निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ सकेगा।

संस्थान के छात्रों व अध्यापकों ने विविध शैक्षणिक, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं, कार्यक्रमों व आयोजन में सोत्साह भाग लिया, जिनके विस्तृत समाचार इस पत्रिका में आप पढेंगे।

– प्रो. दामोदर शास्त्री

संस्थान का बारीकी से अवलोकन कर दिया आशीर्वाद

शिक्षा से अधिक सार्थक है संस्कारयुक्त शिक्षा- आचार्यश्री महाश्रमण

संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा, शिक्षा अपने आप में बहुत महत्त्वपूर्ण होती है, किन्तु संस्कारयुक्त शिक्षा अत्यधिक फलदायी है। शिक्षा के साथ-साथ संस्कारों का होना अत्यावश्यक है। वे विश्वविद्यालय में 20 जनवरी को अपने अवलोकन के बाद आई.सी.टी. कक्ष में छात्राध्यापिकाओं एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में छात्राओं को सम्बोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने छात्राध्यापिकाओं द्वारा अनुपयोगी सामग्री के माध्यम से उपयोगी सामग्री के निर्माण के सृजनात्मक कार्यों को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के आग्रह पर अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने विश्वविद्यालय में पदार्पण किया। उनके आगमन पर एन.सी.सी. की छात्राओं ने उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर प्रदान किया।

स्मार्ट क्लास की तकनीक देखी

अनुशास्ता महाश्रमण ने महिला उच्च शिक्षा केन्द्र, आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अवलोकन किया। उन्होंने महाविद्यालय के स्मार्ट क्लासरूम, मेडिकल रूम, रोजगार परामर्श केन्द्र, प्रार्थना प्रशाल, प्रेक्षाध्यान-कक्ष, प्राचार्य-कक्ष एवं कार्यालय आदि का अवलोकन किया। उन्होंने स्मार्ट क्लास में चल रहे जोधपुर के सुप्रसिद्ध समाजशास्त्री प्रो. के. एन. व्यास के लाईव व्याख्यान को भी देखा। ध्यातव्य है कि इस विश्वविद्यालय में इन स्मार्ट क्लास रूम में विभिन्न विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान का लाईव प्रसारण नियमित रूप से होता है। संस्थान में इस तरह के 26 स्मार्ट क्लास रूम हैं। आचार्य महाश्रमण ने आन्तरिक गुणवत्ता मूल्यांकन प्रकोष्ठ का अवलोकन भी किया एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षण तथा प्रबंधन के लिए किये जाने वाले कार्यों की जानकारी प्राप्त की। संस्थान के शिक्षा विभाग में बी.एड., एम.एड के साथ-साथ बी.ए.-बी.एड. एवं बी. एससी-बी.एड. के पाठ्यक्रमों के संचालन की जानकारी प्राप्त की। उन्होंने विभाग के विभागाध्यक्ष-कक्ष, स्टाफ-कक्ष, जन्तु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिक विज्ञान एवं मनोविज्ञान आदि प्रयोगशालाओं का अवलोकन सूक्ष्मता से किया और वे इनमें कराये जाने वाले प्रयोगों के प्रोटोकोल से अवगत हुए। संस्थान की शारीरिक व्यायामशाला (जिम) का भी उन्होंने अवलोकन किया।

हर क्रियाकलाप में प्रामाणिकता जरूरी

इसके पश्चात् आचार्यश्री महाश्रमण ने प्रशासनिक खण्ड में संस्थापन शाखा, उपकुलसचिव कार्यालय, कुलसचिव कार्यालय, वित्ताधिकारी कार्यालय, सहायक कुलसचिव कार्यालय देखे, फिर कुलपति कक्ष में आने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ एवं कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने उन्हें नयी शिक्षा नीति-2020 पर आधारित संस्थान द्वारा निर्मित योजना का दस्तावेज भेंट किया। आचार्य महाश्रमण ने कुलपति को आशीर्वाद देते हुए कहा कि संस्थान के क्रियाकलापों एवं गतिविधियों में सतत् जागरूकता बनी रहे। परस्पर सौहार्द एवं सहयोग वृद्धिगत होता रहे।

इसके बाद कुलाधिपति सावित्री जिन्दल के कक्ष में पधार कर उन्हें भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के इलेक्ट्रोनिक मीडिया प्रोडक्शन सेण्टर में अनुशास्ता के वक्तव्य को रिकार्ड भी किया गया। उन्होंने सेण्टर में उपलब्ध नवीनतम तकनीकों की जानकारी प्राप्त की।

अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय का अवलोकन

इसके पश्चात् अनुशास्ता ने शिक्षकेतर कर्मचारियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि सभी कर्मचारियों को पूर्ण सेवाभाव एवं निष्ठा से कार्य करना चाहिए। संस्थान के निरन्तर विकास में ही सबका विकास निहित है। बाद में महाश्रमण ने दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का अवलोकन किया। निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने उन्हें प्रवेश प्रक्रिया, पाठ्यसामग्री, सत्रीय कार्य एवं परीक्षा सम्बन्धी कार्यों की जानकारी दी।

संस्थान में स्थित अन्तर्राष्ट्रीय मामलों के कार्यालय का भी उन्होंने अवलोकन किया, जहां कार्यालय द्वारा किये जाने वाले कार्यों से अनुशास्ता को अवगत कराया गया। आचार्यश्री ने अहिंसा एवं शांति विभाग में कोटा खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं सुप्रसिद्ध प्रोफेसर नरेश दाधीच के लाईव व्याख्यान को देखा तथा विश्वविद्यालय द्वारा अब तक हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित पुस्तकों का भी अवलोकन किया। शोध विभाग में संस्थान के पी-एच्. डी. शोधार्थियों के शोध-प्रबन्ध का भी उन्होंने अवलोकन किया। यहां लगभग 400 शोधार्थियों को अब तक संस्थान से पी-एच.डी. डिग्री प्रदान की जा चुकी है। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग का भी अनुशास्ता द्वारा अवलोकन किया गया और उनके द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों से अवगत हुए तथा योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की प्रयोगशाला में स्थित पेरीस्कोप, ई.ई.जी. , ई.एम.जी., पोलेराईट, स्पाईरोमीटर, बायोकेमिस्ट्री, सी.बी.सी. आदि मशीनों तथा मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का भी अवलोकन किया।

आत्मोत्थ ज्ञान की आराधना करें

शैक्षणिक प्रखण्ड में स्थित सेमीनार हॉल में उन्होंने शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि यूं तो आत्मोत्थ ज्ञान ही सर्वोत्कृष्ट है, इस ज्ञान की जितनी सम्भव हो, आराधना होनी चाहिए; किन्तु ऐन्द्रिय ज्ञान भी जरूरी है। प्राध्यापक बनना कोई सरल कार्य नहीं है। बड़े परिश्रम के पश्चात् प्राध्यापक बनते हैं, फिर भी प्राध्यापकों को प्रतिदिन की कक्षा में पूर्ण स्वाध्याय के साथ जाना चाहिये, ताकि विद्यार्थियों को व्यवस्थित ज्ञान दिया जा सके। अनुशास्ता ने बताया कि मेरे प्रतिनिधि के रूप में आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि कुमार श्रमण संस्थान के साथ निकटता से जुड़े हुए हैं। आचार्यश्री ने संस्थान में कार्यरत समणियों की उपयोगिता का भी उल्लेख किया तथा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की कार्यशैली से प्रभावित होकर उन्हें आशीर्वाद दिया। इसके पूर्व कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने भी विचार व्यक्त किए।

प्राच्यविद्या के विकास में तत्पर

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर संस्थान में अब तक किये गये ऑनलाईन कक्षाओं हेतु निर्मित विभिन्न वीडियो सामग्री, जैनविद्या के अल्पावधि पाठ्यक्रमों आदि रचनात्मक नवाचारों के विषय में प्रकाश डाला। इस अवसर पर आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमार श्रमण ने संस्थान के विकास पर संतोष व्यक्त करते हुए कहा कि संस्थान अपने उद्देश्यों के अनुरूप प्राच्यविद्याओं के विकास की दिशा में तत्पर होकर कार्य कर रहा है। मुख्य मुनि मुनिश्री महावीर कुमारजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संयोजन विशेषाधिकारी प्रो. नलिन शास्त्री ने किया। अन्त में आचार्यश्री ने मंगलपाठ सुनाया।

इस पदार्पण कार्यक्रम में आचार्यश्री के साथ मुनिवृन्द, समणीवृन्द, जैन विश्वभारती संस्थान के सभी शिक्षक, शिक्षकेतर अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थियों के साथ-साथ मातृ संस्था जैन विश्व भारती के अध्यक्ष मनोज लूणिया, पूर्व अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड़, रमेश बोहरा एवं मंत्री प्रमोद बैद, संयुक्त मंत्री जीवनमल मालू, आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष शान्तिलाल बरमेचा, संयोजक भागचन्द

प्राच्यविद्या-जैन विद्या के विकास में वैश्विक स्तर पर सकारात्मक भूमिका वहन करें- आचार्यश्री महाश्रमण

आचार्यश्री महाश्रमणजी के बहुआयामी कर्तृत्व पर आधारित पुस्तक का विमोचन

संस्थान द्वारा अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी के कर्तृत्व पर आधारित नवीन प्रकाशित पुस्तक ''आचार्य महाश्रमणः विविध आयामी अवदान'' का विमोचन 22 जनवरी को आचार्यश्री की पावन सन्निधि में किया गया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा संपादित इस पुस्तक में देशभर के 22 मूर्धन्य विद्वानों के आलेखों का समावेश किया गया है। पुस्तक के लोकार्पण के अवसर पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, प्रो. दामोदर शास्त्री, जैन विश्वभारती के अध्यक्ष मनोज लूणिया, पूर्व अध्यक्ष धर्मचन्द लूंकड़, अरविंद संचेती, अमरचंद लूंकड़, वित्त समिति सदस्य प्रमोद बैद, केवलचंद माण्डोत, प्रो. नलिन के. शास्त्री आदि उपस्थित रहे। संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने वक्तव्य में कहा कि गुरुदेव के बहुआयामी अवदानों के शब्दांकन का अत्यन्त लघु प्रयास इस कृति के माध्यम से संस्थान ने किया है, जिसे पूज्यवर को अर्पित किया जा रहा है।

इस अवसर पर समाजशास्त्र के विद्वान् प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी ने आचार्यश्री के अवदानों के विस्तृत फलक पर प्रकाश डालते हुए पूज्यवर के सम्मुख बताया कि जिस प्रकार मदनमोहन मालवीय के संकल्पों से काशी हिन्दू विश्वविद्यालय आविर्भूत हुआ है, उसी प्रकार जैन विश्वभारती संस्थान तेरापंथ के महान् आचार्य गणाधिपति आचार्यश्री तुलसी की प्रेरणा से संस्थापित हुआ है और इसके विकास में आचार्यश्री महाप्रज्ञ के संप्रेरण को आचार्यश्री महाश्रमणजी की प्रेरणा ने अद्भुत विस्तार दिया है, जिसकी फलश्रुति परिणति है कि संस्थान को हाल ही में नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्राप्त हुआ है एवं मूल्यनिष्ठ शिक्षा के सर्वोच्च केन्द्र के रूप में यह विश्वविद्यालय आगामी कालखंड में सम्पूर्ण देश को दिशाबोध दे सकने में समर्थ हो सकेगा। पूज्य आचार्यश्री ने अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि विश्वविद्यालय ने कुलपति प्रो. दूगड़ के नेतृत्व में अच्छी प्रगति की है और विकास की गति को निरंतर गतिशील रखने की आशा है। विश्वविद्यालय प्राच्य विद्या और विशेष रूप से जैन विद्या के विकास में वैश्विक स्तर पर अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करे तथा इनके विस्तार में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करे, ऐसी अपेक्षा है।

आचार्यश्री महाश्रमण ने विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय 'वर्धमान ग्रंथागार' का किया भ्रमण

6 हजार दुर्लभ पांडुलिपियों के आधुनिक तकनीक के अद्भुत कार्य के साथ किया जा रहा है कम्प्यूटराईजेशन

संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने 26 जनवरी को विश्वविद्यालय के केंद्रीय पुस्तकालय 'वर्धमान ग्रंथागार' का भ्रमण करके वहां स्थित दुर्लभ पांडुलिपियों के संरक्षण केन्द्र का अवलोकन किया। इस दौरान कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अनुशास्ता को केंद्रीय पुस्तकालय की गतिविधियों से अवगत करवाते हुए बताया कि पुस्तकालय की लगभग सभी गतिविधियों को तकनीक के सहयोग से स्वचालित किया जा रहा है एवं पुस्तकालय में विद्यमान जैन एवं जैनेतर सम्प्रदाय की लगभग 6 हजार से अधिक पांडुलिपियों के वृहद् भण्डार को दीर्घकाल के लिए सुरक्षित एवं संरक्षित करने के लिए भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के आर्थिक सहयोग से पांडुलिपि संरक्षण केंद्र की स्थापना की गई है। पिछले तीन सालों से यहां स्थापित पांडुलिपि संरक्षण केंद्र के माध्यम से भारतीय प्राचीन लिपियों में हस्तलिखित ग्रंथों का संरक्षण किया जा रहा है, जो पाण्डुलिपि 100 वर्ष से ज्यादा प्राचीन है तथा हस्तनिर्मित कागज पर लिखित हैं, उन सभी पांडुलिपियों में जैन आगम, संस्कृति, पुराण, ज्योतिष, व्याकरण, दर्शन, आचार तथा आयुर्वेद विषयक ज्ञान का भंडार है। आचार्यश्री महाश्रमण ने चरणबद्ध तरीके से पांडुलिपियों के संरक्षण की विधि का अवलोकन किया तथा केंद्र के सहयोग से किये जा रहे इस महत्त्वपूर्ण कार्य की सराहना की। केंद्र में कार्यरत सुरभि जैन ने प्रायोगिक विधि द्वारा किए जाने वाले संरक्षण कार्य को दिखाया तथा डॉ. योगेश कुमार जैन ने जीर्ण अथवा टूटने वाले पत्रों के संरक्षण के साथ ही स्याही निकल जाने अथवा फैलने वाले पत्रों के संरक्षण की आधुनिक विधि की जानकारी दी। प्राचीन काल में संरक्षण हेतु हल्दी, लौंग, सूखे नीम के पत्ते एवं कपूर की गोली की पोटली बनाकर हस्तप्रद के साथ रखा जाता था, परंतु अब आधुनिक तरीके में इनके स्थान पर हस्तप्रद की उम्र बढ़ाने के लिए विविध केमिकल, पारदर्शी पेपर, हस्तनिर्मित कागज, हार्डबोर्ड एवं कॉटन का लाल कपड़ा उपयोग में लिया जाता है। संरक्षित पाण्डुलिपियों का सम्पूर्ण विवरण कंप्यूटर के माध्यम से सुरक्षित किया जा रहा है, जिससे पाण्डुलिपियों पर शोध करने वाले शोधकर्ताओं को सम्पूर्ण जानकारी सहज मिल सके।

इस केंद्र में लिपिबद्ध एवं चित्रित पांडुलिपि का संरक्षण कार्य किया जा रहा है। केंद्र द्वारा चौबीस तीर्थंकर के जीवन दर्शन पर आधारित 31 फुट लंबे कागज़ के चित्रित पट का संरक्षण भी किया है, जो कि लगभग फट चुका

था तथा उसका कागज़ गल गया था। इस चित्रित पट को पुनः सुरक्षित देख आचार्यश्री महाश्रमण ने प्रसन्नता व्यक्त की तथा कार्य की सराहना के साथ ही केंद्र के दिशा-निर्देशक कुलपति प्रो. दूगड़ को आशीर्वाद प्रदान दिया। पुस्तकालय कर्मचारियों द्वारा आचार्यश्री के समक्ष पुस्तकालय में संरक्षित दुर्लभ ग्रंथों एवं पुस्तकों के संग्रह को भी प्रदर्शित किया गया। उन्होंने सभी गतिविधियों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। इस भ्रमण के दौरान मुख्य-मुनि मुनिश्री महावीर कुमार, संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमार श्रमण, मुनि कीर्ति कुमार एवं मुनि विश्रुत कुमार, धर्मचंद लुंकड़, जीवनमल मालू, प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बनवारीलाल जैन आदि उपस्थित रहे।

अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी ने किया 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग' का अवलोकन

संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा संस्थान के नवीन प्रकल्प 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग' के निर्माणाधीन भवन का 22 जनवरी को अवलोकन किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने आचार्यश्री को प्रस्तावित मेडिकल कॉलेज की सम्पूर्ण परियोजना से परिचित करवाया और अवगत करवाया कि इस मेडिकल कॉलेज में 50 बेड के अस्पताल की भी सुविधाएं विकसित की जा रही हैं। चिकित्सकीय उपचार की गुणवत्ता को सुनिश्चित किये जाने के क्रम में भारत के सर्वोत्तम प्राकृतिक चिकित्सा संस्थान जिन्दल नेचरक्योर इंस्टीट्यूट के अकादमिक सहयोग के बारे में भी उन्होंने बताया। जीवन विज्ञान एवं योग विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने प्रस्तावित महाविद्यालय की सम्पूर्ण रूपरेखा का विवरण आचार्यश्री के सम्मुख नक्शों के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने संबोधन में इंगित किया कि प्राकृतिक चिकित्सा एक ऐसी अनूठी प्रणाली है, जिसमें जीवन के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक तलों के रचनात्मक सिद्धान्तों के साथ व्यक्ति के सद्भाव का निर्माण होता है। इसमें स्वास्थ्य के प्रोत्साहन, रोग निवारक और उपचारात्मक प्रबन्धन के साथ-साथ शरीर को फिर से मज़बूती प्रदान करने की भी संभावनाएं सन्निहित हैं। आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा उपचार को एक ऐसी प्रणाली के रूप में लक्षित करते थे, जो शरीर के भीतर महत्त्वपूर्ण उपचारात्मक शक्ति के सम्यक् उपयोग को भाव चेतना के साथ जोड़कर आरोग्य प्रदान करती है।

मुनिश्री कीर्ति कुमार ने इस प्रकल्प के विकास के प्रारम्भिक चरण का स्मरण करते हुए विशाखापटनम में सम्पन्न हुई चर्चा को रेखांकित किया और बताया कि किस प्रकार रुचिपूर्वक प्रसिद्ध समाजसेवी एवं भामाशाह नोखा निवासी एवं कोलकाता प्रवासी कमलकिशोर ललवानी एवं लाडनूं निवासी तथा कोलकाता प्रवासी पदमचंद भुतोड़िया ने इस परियोजना में सहयोग देने का भाव व्यक्त किया। संस्थान के आध्यात्मिक-पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमणजी ने भी इस अवसर पर संबोधित किया एवं इस क्षेत्र की अन्य संभावनाओं एवं संस्थान द्वारा भविष्य में इस दिशा में बढ़ाए जाने वाले कदमों एवं योजनाओं के बारे में बताया।

इस अवसर पर नैचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल के भवन-निर्माण दानदाताओं कमलकिशोर लालवानी और पूनमचन्दजी भुतोड़िया के परिवारजनों का सम्मान किया गया। समारोह का संचालन जीवन विज्ञान एवं योग विभाग के सह-आचार्य डॉ. युवराजसिंह खंगारोत ने किया।

पुरुष, पुस्तक एवं पंथ से प्रतिष्ठित है भारत भूमि – अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में मनाया गया गणतंत्र दिवस समारोह

संस्थान में 73वां गणतंत्र दिवस समारोह अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में 26 जनवरी को मनाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री ने उद्बोधन देते हुए कहा, भारत लोकतंत्र का सबसे विशाल देश है। लोकतंत्रात्मक व्यवस्था में जनता-जनार्दन का अत्यधिक महत्त्व है। यह भारत भूमि पुरुष, पुस्तक एवं पंथ से प्रतिष्ठित है, जिसके कारण भारत भूमि का वैशिष्ट्य विश्व में आदर के साथ स्वीकार किया जाता है। यहां के पुरुष अथवा युवा ने अपने पुरुषार्थ के बल पर अनेक क्षेत्रों को समृद्ध किया है। विभिन्न परम्पराओं की पुस्तकें, जो इस भारतभूमि को विभिन्न ज्ञान-विज्ञानों से समृद्ध किये हुए है, उनमें जैनागमों, बौद्ध त्रिपिटकों एवं वैदिक उपनिषद, भगवद् गीता आदि यहां के पुरुषों के लिए मार्गदर्शक के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। भारतभूमि में निहित विभिन्न परम्पराओं के पंथों के अवदान भी महत्त्वपूर्ण हैं। अनुशास्ता ने यह भी कहा कि आजादी का मतलब स्वतंत्रता है, न कि स्वच्छन्दता। प्रत्येक नागरिक को आत्मानुशासित होकर अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए। इस अवसर पर आचार्यश्री ने संस्थान में हो रहे विकास के प्रति संतोष व्यक्त किया।

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा, यह दिन उन क्रान्तिकारियों को याद करने का दिन है, जिन्होंने अपने त्याग एवं बलिदान से देश को आजाद करवाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई और जिन्होंने स्वतंत्र भारत में सुशासन स्थापित करने के लिए लम्बे प्रयासों के बाद संविधान के रूप में व्यवस्थाओं का एक ऐसा दस्तावेज प्रस्तुत किया, जिस पर चलते हुए भारत विविध क्षेत्रों में अपनी पहचान बना रहा है। यह वो देश है, जिसमें 60 प्रतिशत युवा अपने महत्त्वपूर्ण योगदानों से न केवल देश को बल्कि विश्व को भी प्रतिष्ठित कर रहे हैं। अनुशास्ता का आज का आगमन हमें अक्षय-ऊर्जा प्रदान कर रहा है, जिससे हम संस्थान के विकास में चार चांद लगा सकते हैं। समारोह में मुख्य अतिथि श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष सुरेश चंद गोयल ने कहा कि सही मायने में स्वराज का दिन तो आज है। 15 अगस्त को तो हम आजाद हुए थे, किन्तु अपना संविधान प्रस्तुत करके आज ही के दिन स्वराज को प्राप्त किया था।

प्रारम्भ में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान के बाद एनसीसी की छात्राओं ने तिरंगे झण्डे को सलामी दी। इस अवसर पर संस्थान के विकास में विशेष योगदान देने वाले श्री रमेशजी गोयल एवं पुखराजजी बडोला का उत्तरीय एवं संस्थान का प्रतीक चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम में एनसीसी की छात्राओं को रैंक भी प्रदान की। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. युवजराजसिंह खंगारोत ने किया। इस अवसर पर जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लूंकड़ एवं रमेश कुमार बोहरा, जैन विश्व भारती के मंत्री प्रमोद बैद, मुख्य ट्रस्टी अमरचंद लूंकड़, मूलचंद नाहर, पुखराज बडोला, केवलचन्द माण्डोत, संस्थान के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमार श्रमण, मुनिश्री कीर्तिकुमार, मुनिश्री विश्रुत कुमार, प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बी.एल. जैन, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता आदि उपस्थित थे।

जैन विश्वभारती संस्थान है एक विलक्षण विश्वविद्यालय- केन्द्रीय मंत्री मेघवाल

केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल का कुलाधिपति बनने पर समारोह पूर्वक सम्मान

केन्द्रीय संस्कृति मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने कहा है कि लाडनूं का जैन विश्वभारती संस्थान एक विलक्षण विश्वविद्यालय है। यहां जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती है और विद्यार्थी के लिए आदर्श जीवन का मार्ग प्रशस्त किया जाता है। वे यहां 12 मई को महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में आयोजित सम्मान समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। यह समारोह उनके कुलाधिपति पद पर नियुक्त होने के बाद पहली बार विश्वविद्यालय पहुंचने पर आयोजित किया गया। उन्होंने गणाधिपति आचार्य तुलसी के जीवन संस्मरण का उल्लेख करते हुए एक कहानी और रेलयात्रा के सम्बंध में दूसरी कहानी प्रस्तुत की और विद्यार्थियों को अपशब्दों का प्रयोग नहीं करने एवं किसी के साथ धोखा नहीं करने की प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में केन्द्रीय मंत्री व कुलाधिपति मेघवाल को शॉल, प्रतीक चिह्न, साहित्य एवं नियुक्ति पत्र प्रदान करके कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व अतिथियों ने सम्मानित किया।

मूल्य केन्द्रित संस्थान

कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने सम्बोधन में बताया कि इस विश्वविद्यालय में प्रोफेशनल का ही नहीं बल्कि मानव का निर्माण किया जाता है। यह मूल्य केन्द्रित संस्थान है। यह विश्व में पहला विश्वविद्यालय है, जहां अनुशास्ता का पद वैधानिक तौर पर है और अनुशास्ता के रूप में धर्मसंघ के आचार्य विश्वविद्यालय पर अनुशासन का अंकुश रखते हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय के अब तक रहे कुलाधिपतियों के बारे में जानकारी दी और बताया कि अर्जुनराम मेघवाल के नियुक्त होने से यह विश्वविद्यालय गौरवान्वित हुआ है। प्रो. दूगड़ ने विश्वविद्यालय के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि यहां के 4 शिक्षकों को राष्ट्रपति पुरस्कार मिल चुका है। यहां के शिक्षक अमेरिका के विश्वविद्यालयों में स्थापित जैन चैयर में शिक्षण कार्य के लिए अमेरिका जाते रहते हैं। यहां के कुलपति रहे प्रो. रामजी सिंह को पद्मश्री अवार्ड से नवाजा जा चुका। योग एवं जीवन विज्ञान के विद्यार्थियों ने 7 विश्व-रिकॉर्ड बनाए हैं। यहां सैंकड़ों की संख्या में रिसर्च प्रोजेक्ट किए जा चुके हैं। उन्होंने बताया कि यहां जैनोलोजी तथा प्राकृत व संस्कृत विभागों में छात्रों से कोई फीस नहीं ली जाती है, अपितु उनके लिए संस्थान में आवास व भोजन की व्यवस्था भी निःशुल्क रहती है। उन्होंने विश्वविद्यालय की विभिन्न सुविधाओं व व्यवस्थाओं की उत्कृष्टता की जानकारी भी दी।

प्रख्यात लेखक एवं प्रेरक वक्ता नंदितेश निलय ने अपने सम्बोधन में बताया कि वे जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय से मंत्रमुग्ध हैं। यह अद्भुत विश्वविद्यालय है, जहां मूल्यों को स्थापित करने के लिए कार्य किया जा रहा है। यह अनोखी भूमि है, जहां इस युग में भी अच्छा होने के लिए प्रेरित किया जाता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री पंकज डागा ने कुलाधिपति पद पर केन्द्रीय मंत्री श्री अर्जुनराम मेघवाल के पदभार ग्रहण करने पर विश्वविद्यालय की निरन्तर प्रगति की कामना की और कहा कि विश्वविद्यालय में विशेष पद पर विशेष व्यक्ति का पदस्थापित होना यहां की विशेषताओं को और प्रखर करेगा।

सदैव सहयोग को तत्पर है मातृसंस्था

जैन विश्व भारती के संयुक्त सचिव जीवनमल मालू ने कार्यक्रम में मातृसंस्था की ओर से विश्वविद्यालय को सदैव अधिकतम सहयोग करते रहने की भावना प्रकट की। समारोह में जैन विश्वभारती के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़ व समाजसेवी केवलचंद मांडोत चैन्नई विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ थे। कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण, हर्षिता एवं साथी के स्वागत गीत एवं प्रो. नलिन के. शास्त्री के स्वागत वक्तव्य के साथ किया गया। अंत में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। समारोह के बाद सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी गई, जिनमें राधिका व साथी ने गणेश वंदना, ऐश्वर्या ने शास्त्रीय नृत्य, अर्चना शर्मा ने भजन, उर्वशी ने घूमर नृत्य एवं योग व जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने विभिन्न योगासनों व सूर्य नमस्कार का सामुहिक प्रदर्शन किया। छात्र अर्क ज्योति ने आश्चर्यजनक योगसानों एवं शरीर के लचीलेपन के कार्यक्रम प्रस्तुत किए। इस अवसर पर भाजपा जिलाध्यक्ष गजेन्द्र सिंह ओड़ींट, सम्पत पारीक, महावीर चारण, अंजना शर्मा, जगदीश पारीक, देवाराम पटेल, मुरलीधर सोनी, ओमसिंह मोहिल, बनवारीलाल शर्मा आदि एवं समस्त संस्थान सदस्य व विद्यार्थी मौजूद रहे।

सामूहिक सहयोग से संभव हो पाता है विकास- प्रो. दूगड़

समारोह पूर्वक आयोजित हुआ विश्वविद्यालय का 32वां स्थापना दिवस

संस्थान का 32वां स्थापना दिवस समारोह 28 मार्च को यहां महाश्रमण ऑडिटोरियम में धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि विकास के लिए सामूहिक सहयोग की जरूरत होती है, यह किसी अकेले व्यक्ति का प्रयास नहीं कहा जा सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की वर्तमान गतिविधियों और विकास के साथ भावी योजनाओं से अवगत करवाया। आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड होस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग के बारे में जानकारी देते हुए उन्होंने सहयोग करने वाले दानदाताओं के प्रति आभार जताया।

कुलपति ने अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण व आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री कुमारश्रमण तथा मुनिश्री कीर्तिकुमार, मुनि विश्रुतकुमार एवं मुनि जयकुमार के प्रति विशेष आभार व्यक्त किया। समारोह के मुख्य अतिथि श्रीजैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कोलकाता के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया थे, जिन्होंने विश्वविद्यालय को अभूतपूर्व बताया तथा कहा कि यह तपस्वी आचार्यों की ही महत्ता है कि इस स्थान पर यह विशाल विश्वस्तरीय संस्थान सुचारू रूप से संचालित किया जा रहा है। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य के बाद संस्थान के स्थापना दिवस पर राज्यपाल द्वारा भेजे गए संदेश का वाचन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़, रमेश सी. बोहरा, अमरचन्द लूंकड़, जयन्तीलाल सुराणा (चैन्नई), विनोद बैद कोलकाता, बाबुलाल सेखानी अहमदाबाद, पंकज डागा एवं रमेश डागा चैन्नई उपस्थित रहे। सभी अतिथियों को उत्तरीय अर्पित करके एवं प्रतीक चिह्न प्रदान कर सम्मानित

किया गया। समारोह के प्रारम्भ में संस्थान के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने विश्वविद्यालय का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

प्रो. गेलड़ा को दिया गया लाईफ टाईम अचीवमेण्ट अवार्ड

समारोह के सारस्वत अतिथि एवं संस्थान के संस्थापक कुलपति प्रो. महावीरराज गेलड़ा ने कार्यक्रम में अपने कार्यकाल के बीते लम्हों को याद किया तथा उस समय की स्थिति और आज की तुलना करते हुए संस्थान के विकास को सराहा। कार्यक्रम में उनका अभिनन्दन करते हुए उन्हें 'लाईफ टाईम अचीवमेण्ट अवार्ड' से सम्मानित किया गया। इस अवार्ड का वाचन प्रो. नलिन के. शास्त्री ने किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा उन्हें यह अवार्ड प्रदान किया गया। समारोह में विद्यानिधि सम्मान से डॉ. जे.पी. सिंह को नवाजा गया और कौशलनिधि सम्मान अमीलाल चाहर को प्रदान किया गया। श्रमनिधि सम्मान काना राम को दिया गया। विशिष्ट सेवा सम्मान डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत और मोहन सियोल को प्रदान किया गया। श्रेष्ठ विद्यार्थी सम्मान चित्रा बागड़ा, सृष्टि कुमारी व नवनिधि दौलावत को दिया गया।

इसी प्रकार खेलकूद सम्मान और सांस्कृतिक सम्मान इन क्षेत्रों के उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली विविध छात्राओं को प्रदान किया गया। समारोह का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। कार्यक्रम के अंत में सभी सम्मानित अतिथियों ने संस्थान की महत्त्वाकांक्षी परियोजना 'आचार्यश्री महाप्रज्ञ हॉस्पिटल एण्ड मेडिकल कॉलेज ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग' का अवलोकन किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित

विभिन्न प्रांतीय नृत्यों से छात्राओं ने किया सांस्कृतिक एकता को साकार

संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के द्वितीय चरण में विविध सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम में देश के अनेक प्रांतों की संस्कृतियां सजीव हो गई। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्रेक्षा द्वारा प्रस्तुत गणेश वंदना से किया गया।

कार्यक्रम में ऐश्वर्या द्वारा प्रस्तुत शिव-तांडव नृत्य सभी को आकर्षक लगा। चित्रा ने राजस्थानी घूमर नृत्य प्रस्तुत करके सबको संस्कृति के रंग से सराबोर कर दिया। दिव्या ग्रुप ने पंजाबी नृत्य की प्रस्तुति दी। कल्पिता एवं समूह ने हरियाणवी नृत्य से सबका मन मोहा। हर्षिता ग्रुप ने मर्द मराठा डांस पेश करके सबको अलग आभास

करवाया। किरण व पूजा ने तमिल नृत्य प्रस्तुत किया। निधि शर्मा ने सामयिक नृत्य पेश किया। अर्काज्योति राणा ने योग का डेमो प्रस्तुत किया। अभिलाषा स्वामी ने कविता पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन स्मृति कुमारी व भावना ने किया।

नेचुरोपैथी व योग चिकित्सा के उत्थान में जरूरी है- आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों एवं विधियों का सहयोग- प्रो. दूगड़

अहमदाबाद के नेचुरोपैथी इंस्टीट्यूट व मेहसाणा के शंकुस नेचुरल हेल्थ सेंटर का अवलोकन एवं विचार गोष्ठी

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अहमदाबाद के कोबा में महाप्रज्ञ नेचुरोपेथी एवं योगा इंस्टीट्यूट तथा मेहसाणा में शंकुस नेचुरल हेल्थ सेंटर का अवलोकन किया। कोबा में प्रेक्षाध्यान अकादमी की यूनिट के रूप में एनवाईएमयूसीटी द्वारा संचालित एवं प्रबंधित महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी एंड योगा इंस्टीट्यूट पर की गई व्यवस्थाओं व सुविधाओं का उन्होंने अवलोकन करने के साथ ही उनकी उपयोगिता का मूल्यांकन किया। इस अवसर पर इंस्टीट्यूट के प्रबंध मंडल व अधिकारियों के साथ आयोजित विचार गोष्ठी में कुलपति प्रो. दूगड़ ने नेचुरोपैथिक एवं यौगिक चिकित्सा की आवश्यकता और ऐलोपैथी के बढ़ते दुष्प्रभावों से बचने के लिए प्राकृतिक चिकित्सा की ओर लोगों के तेजी से बढते रूझान का चित्रण किया। उन्होंने नेचुरोपैथी और योग में आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों एवं विधियों के सहयोग की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि इससे इन पद्धतियों की प्रामाणिकता को सिद्ध किया जा सकता है। इस अवसर पर उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान में शीघ्र शुरू किए जाने वाले आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड होस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग के बारे में विस्तार से जानकारी दी और उसके माध्यम से किए जा सकने वाले नेचुरोपैथी के उत्थान और विस्तार के विविध आयामों की जानकारी भी दी। इसके साथ ही उन्होंने गुजरात दौरे में मेहसाणा स्थित शंकुस नेचुरोपैथी हेल्थ सेंटर का अवलोकन भी किया और समस्त व्यवस्थाओं एवं सुविधाओं का जायजा लिया। कुलपति प्रो. दूगड़ के साथ बाबूलाल सेखानी, पुखराज मदानी, चिरंजीलाल चौपड़ा, एच.के. जैन आदि भी थे।

साधु-साध्वियों को उच्च-शिक्षा प्रदान करने में संस्थान अद्वितीय- प्रो. दूगड़

कुलपति का चैन्नई में तेरापंथ समाज ने किया सम्मान

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ का चैन्नई में 7 अप्रैल को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज की ओर से सम्मान किया गया। वे वहां विश्वविद्यालय की पूर्व कुलपति साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा ठाणा 6 के सेवा व दर्शनार्थ आए थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा है कि जैन विद्या में पूर्ण पारंगत होने के साथ प्रशासनिक क्षमता में भी मंगलप्रज्ञा जी सिद्धहस्त थीं। साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा ने अपने वक्तव्य में जैन परिवारों के बीच जैविभा विश्वविद्यालय और इसके कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। उन्होंने इस विश्वविद्यालय की अद्वितीयता के बारे में बताया और समण संकाय द्वारा अध्यापन करवाए जाने और सभी धर्म-सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने के बारे में बताया। उन्होंने विश्वविद्यालय के प्रारम्भ से लेकर निरन्तर विकास की यात्रा के बारे में भी जानकारी दी और शीघ्र प्रारम्भ किए जा रहे आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड होस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग के बारे में बताया। इस अवसर पर चैन्नई का वृहद् जैन समाज वहां एकत्रित था। सबने मिलकर प्रो. दूगड़ का उत्तरीय पहनाकर व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मान किया। इस अवसर पर धर्मचंद लूंकड़, अमरचंद लूंकड़, प्यारेलाल पीतलिया, संतोष कातरेला आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) ने बनाया प्रो. दूगड़ को नैक पीयर टीम का चेयरमैन

कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ ने किया मध्यप्रदेश के शिक्षण संस्थान का निरीक्षण

संस्थान के कुलपति प्रो. बी. आर. दूगड़ द्वारा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (नैक) द्वारा गठित नैक पीयर टीम के चेयरमैन के रूप में मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले में स्थित राजकीय महाराजा मार्तण्ड महाविद्यालय, कोतमा का द्वि-दिवसीय निरीक्षण किया गया। जैविभा संस्थान के लिए इसे गौरवप्रद समझा जा रहा है, क्योंकि यह पहला अवसर है जब नैक टीम के अध्यक्ष या सदस्य के रूप में जैविभा संस्थान की ओर से शामिल किया जाकर निरीक्षण किया गया है। इस निरीक्षण के दौरान कुलपति प्रो. दूगड़ के नेतृत्व में इस तीन सदस्यीय टीम ने महाविद्यालय की शैक्षणिक, सह-शैक्षणिक, शोध एवं प्रसार गतिविधियों, भवनों एवं उपलब्ध सुविधाओं का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। टीम द्वारा निरीक्षण-प्रक्रिया के दौरान महाविद्यालय के प्रबंध-मण्डल सदस्यों, शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक सदस्यों, अध्ययनरत छात्रों, अभिभावकों एवं पूर्व-छात्रों के साथ बैठकों का आयोजन कर उनकी संस्थान संबंधी समस्याओं को जाना गया। टीम के भ्रमण के अवसर पर इससे पूर्व महाविद्यालय की ओर से विशेष सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया जाकर स्थानीय संस्कृति का प्रदर्शन किया गया।

प्रारम्भ में महाविद्यालय परिवार द्वारा इस नैक टीम के चेयरमैन प्रो. दूगड़ एवं टीम के अन्य सदस्यों का स्वागत किया गया। इस दो दिवसीय सम्पूर्ण अवलोकन के आधार पर समिति द्वारा नैक प्रत्यायन के रूप में महाविद्यालय को मूल्यांकन प्रक्रिया के अंक प्रदान कर गोपनीयता के साथ बैंगलोर स्थित नैक कार्यालय को ऑनलाईन पोर्टल के माध्यम से प्रेषित किये गये।

नैक निरीक्षण के समापन समारोह में टीम के अध्यक्ष कुलपति प्रो. दूगड़ की अध्यक्षता में टीम द्वारा महाविद्यालय को एक विस्तृत रिपोर्ट भी प्रदान की गई, जिसमें संस्थान की मजबूतियों, कमजोरियों, अवसर, चुनौतियों एवं संस्थान के लिए अनुशंसा को शामिल किया गया। समिति के चेयरमैन प्रो. दूगड़ ने इस समारोह में अपने संबोधन में महाविद्यालय के सर्वांगीण उत्थान के सम्बंध में अनेक सुझाव प्रदत्त किये। समापन समारोह में महाविद्यालय परिवार द्वारा प्रो. दूगड़ एवं अन्य समिति सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की गई एवं समिति सदस्यों के मधुर व्यवहार की प्रशंसा की गयी। उनके द्वारा पहली बार नैक पीयर टीम का हिस्सा बनने पर यहां विश्वविद्यालय में हर्ष जताया गया।

अहिंसा का सिद्धांत सबसे उपयोगी- कुलाधिपति

संस्थान की कुलाधिपति एवं देश की सबसे अमीर महिला उद्यमी सावित्री जिन्दल ने कहा है कि अहिंसा परमो धर्मः का सिद्धांत वर्तमान में बहुत ही उपयोगी बन चुका है। वे हिसार के विद्यादेवी जिन्दल स्कूल में 9 अप्रेल को तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्य महाश्रमण के आगमन पर उनके स्वागत-सम्मान में सम्बोधित कर रही थीं। उन्होंने कहा कि भारत संत-महात्माओं की भूमि है और उनके दर्शन मात्र से ही कल्याण हो सकता है। आचार्य तुलसी के संदेश 'निज पर शासन-फिर अनुशासन' को आचार्यश्री महाश्रमण ने जन-जन के मन में उतारा है। यह समाज के लिए परिवर्तनकारी साबित होगा। तेरापंथ के विचारों को आगे ले जाने के लिए वे तैयार हैं। समाज के लिए उनका हिसार में आगमन उपयोगी सिद्ध होगा। यहां उत्साह और ऊर्जा का लोगों में संचार हुआ है। इस अवसर पर अनेक साधु-साध्वियां, श्रावकगण और अन्य लोग उपस्थित रहे।

जैन विश्वकोष के लिए शोध कर रहे पूर्व आईपीएस उदय सहाय का स्वागत

दिल्ली के पूर्व संयुक्त पुलिस आयुक्त (आईपीएस) उदय सहाय ने 7 मार्च को जैन विश्वभारती संस्थान का दौरा किया। उन्होंने विश्वविद्यालय की समस्त व्यवस्थाओं और अनुशासन व सिद्धांतों की जानकारी प्राप्त की तथा अनुशास्ता के नियंत्रण के साथ जैन संतों के निरन्तर सान्निध्य व आध्यात्मिक ऊर्जा के साथ होने वाले शिक्षण को उपयोगी पाया। भारतीय पुलिस सेवा से सेवानिवृत्त उदय सहाय ने छह दिन यहां अपने शोध कार्य के लिए प्रवास किया। वे जैन विश्वकोश पर अपनी विश्व स्तरीय पुस्तक के लिए आचार्यश्री महाश्रमण और अन्य आचार्यों पर काम कर रहे हैं।

इस अवसर पर उन्होंने कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ से भी मुलाकात की और विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी लेने के साथ कुलपति से चर्चा करते हुए अनेक बिन्दुओं पर अपना ज्ञानवर्द्धन किया। कुलपति प्रो. दूगड़ व ओएसडी प्रो. नलिन के. शास्त्री ने उनको शॉल-पट्ट, प्रतीक चिह्न, साहित्य आदि प्रदान कर उनका व उनकी पत्नी का स्वागत व सम्मान किया।

कुलपति ने किया जिलाधीश का सम्मान, मेडिकल कॉलेज की जानकारी दी

जिला कलेक्टर पीयूष सामरिया ने 12 फरवरी को संस्थान का दौरा किया। उन्होंने यहां व्यवस्थाओं को देखा और पाठ्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उन्हें यहां तैयार हो रहे आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज ऑफ योग एंड नेचुरोपैथी के बारे में जानकारी दी और बताया कि इसके लिए भवन लगभग बनकर तैयार है और शीघ्र ही प्रवेश प्रारम्भ किए जाएंगे।

कलेक्टर को उन्होंने अनुशास्ताओं के आध्यात्मिक निर्देशन में विश्वविद्यालय के संचालन और जीवन मूल्यों और नैतिकता के व्यावहारिक प्रयोगों के बारे में बताते हुए विश्वविद्यालय में अनुशासन व मर्यादाओं के पालन के सम्बंध में जानकारी दी। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने कलेक्टर को उत्तरीय पट्ट व स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया तथा साहित्य एवं विश्वविद्यालय का ब्रोशर आदि उन्हें भेंट किए। इस अवसर पर जैन विश्वभारती के सहमंत्री जीवनमल मालू, पूर्व अध्यक्ष धर्मचंद लूंकड़ व उपखंड अधिकारी अनिल कुमार गढवाल आदि उपस्थित रहे।

पुरुषार्थ पूर्वक समय का सार्थक उपयोग करने पर आती है शक्ति- प्रो. दूगड़

फिजियोथैरेपी सहित विभिन्न नए पाठ्यक्रम शुरू किए जाने की कुलपति ने की घोषणा

कुलपति कार्यकाल के छह वर्ष पूर्ण होने पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि समय का सार्थक उपयोग पुरुषार्थ पूर्वक करने पर व्यक्ति या संस्थान सशक्त बन सकते हैं। कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं हुआ करती। अपना लक्ष्य सामने रखकर हमेशा प्रयासरत रहना चाहिए। हर व्यक्ति में पर्याप्त क्षमता होती है, जरूरत है कि वह अपनी सुप्त क्षमताओं को जागृत करके उनका उपयोग भी शुरू करे। वे अपने कुलपति काल के छह वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में विश्वविद्यालय स्टाफ द्वारा आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने आने वाली चुनौतियों से मुकाबले का आह्वान करते हुए कहा कि अब विश्वविद्यालय तेरापंथ समाज का स्वावलम्बी संस्थान बन चुका है और इन पांच साल में अपने पैरों पर खड़ा होने में समर्थ हो पाया है।

शीघ्र शुरू किया जाएगा मेडिकल कॉलेज

कुलपति ने इस अवसर पर कहा कि नामांकन बढाने पर पूरा जोर दिया जाना जरूरी है तथा संस्थान की महत्त्वाकांक्षी योजना आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग को अविलम्ब शुरू किया जाना है और सबके सहयोग से यह संभव हो पाएगा। उन्होंने विश्वविद्यालय में नए कोर्स के रूप में डायटीशियन कोर्स शुरू करने और उसे एम.ए. स्तर का स्वतंत्र विभाग के रूप में विकसित करने की आवश्यकता बताई। इसी तरह से फिजीयोथैरेपी कार्यक्रम शुरू करने और ट्रांसलेशन, एजुकेशन व जैनोलोजी में भी नए कोर्सेज शुरू करने की आवश्यकता बताई। योग, जैनोलोजी, प्राकृत, शिक्षा आदि पर शॉर्ट टर्म कोर्सेज भी शुरू करने की घोषणा की तथा स्किल बेस्ड कोर्स शुरू करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने जैनविद्या सम्बंधी विभाग के लिए विश्वविद्यालय का पूरे देश के जैन, बौद्ध, प्राच्य विद्या संस्थानों के साथ नेटवर्क स्थापित करने की घोषणा भी की। कुलपति ने देश भर में फैले जैन मैन्युस्क्रिप्ट और साहित्य की सूचियां अपडेट रखे जाने की जरूरत पर भी बल दिया।

कुलपति प्रो. दूगड़ ने संस्थान में चलाई जा रही पांच व्याख्यानमालाओं की जानकारी देते हुए बताया कि आचार्य विद्यानन्द स्मृति व डा. अब्दुल कलाम स्मृति व्याख्यानमालाओं की शुरूआत की जा चुकी है। अब 5-6 व्याख्यानमालाएं और शुरू करने की योजना है, ताकि हर माह देश के विशिष्ट विद्वान विश्वविद्यालय में आएं और यहां सबको लाभान्वित करें। कार्यक्रम में प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. वन्दना कुंडलिया, मोहन सियोल, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, राकेश कुमार जैन व डॉ. रेखा तिवाड़ी ने कुलपति पद के छह वर्ष की उपलब्धियों के बारे में बताया और आगामी कार्यकाल के लिए प्रो. दूगड़ व विश्वविद्यालय के लिए शुभाशंसाएं अभिव्यक्त कीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराजसिंह खांगारोत ने किया।

राज्यस्तरीय वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा तृतीय रही

21वीं राज्यस्तरीय अन्तर्महाविद्यालय वाद-विवाद प्रतियोगिता में संस्थान की शिक्षा विभाग की बी.ए.-बी.एड. छात्रा अभिलाषा स्वामी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। श्रीभगवानदास तोदी महाविद्यालय, लक्ष्मणगढ में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रदेश भर की छात्राओं ने हिस्सा लिया। इसमें 'सदन की राय में सत्ताधारियों के द्वारा सत्ता का दुरूपयोग लोकतंत्र व संविधान के लिए खतरा है' विषय पर पक्ष व विपक्ष में विचार प्रस्तुत करने थे। अभिलाषा को इसमें अपने विचार प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत करने पर तृतीय स्थान के साथ 2550 रूपयों का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया।

भावना चौधरी का राष्ट्रीय पर्यावरण संसद के लिए चयन

नेशनल एनवायरनमेंट यूथ पार्लियामेंट- 2022 के लिए आयोजित राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के लिए चयन किए गए 10 प्रतिभागियों में संस्थान की छात्रा भावना चौधरी को लिया गया है। इस सम्बंध में उदयपुर में मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में आयोजित जोनल प्रतियोगिता में यह चयन किया गया। प्रतियोगिता के नोडल ऑफिसर डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने बताया कि इस प्रतियोगिता में राज्य के 16 विश्वविद्यालयों के 100 से अधिक विद्यार्थियों ने भाग लिया था। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय से 4 विद्यार्थी इस प्रतिस्पर्धा में सम्मिलित हुए। इनमें से बी.एससी.-बी.एड. के सिक्स्थ सेमेस्टर की छात्रा भावना चौधरी ने चयन सूची में अपना स्थान बनाया। राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद में शामिल होने के लिए आयोजित इस प्रतियोगिता में 'संस्कृति और विरासत से पर्यावरण का जुड़ाव' विषय पर अपना वक्तव्य प्रस्तुत करना था। भावना चौधरी को राष्ट्रीय पर्यावरण संसद के लिए चुने जाने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ एवं सभी संकाय सदस्यों ने बधाई व शुभकामनाएं प्रदान की हैं।

'भविष्योन्मुखी पोषणक्षम विकास' के लिए महाप्रज्ञ की प्रेरणा है मार्गदर्शक - प्रो. दूगड़

आचार्य महाप्रज्ञ के 13वें महाप्रयाण दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता एवं तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य युगद्रष्टा आचार्य महाप्रज्ञ के 13वें महाप्रयाण दिवस पर 26 अप्रेल को कार्यक्रम आयोजित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन का सबसे बड़ा सूत्र समय की प्रतिबद्धता को बताते हुए उसके पालन की आवश्यकता बताई। उन्होंने समय की नियमितता को जीवन प्रबंधन के लिए आवश्यक कहा और बताया कि एक छोटे साधारण से बालक की आचार्य महाप्रज्ञ बनने तक की यात्रा योजनाबद्ध तरीके से ही संभव हो पाई थी। उनके जीवन से हर युवा को प्रेरणा मिलती है। उन्हें आधुनिक विवेकानन्द और राधाकृष्ण कहा जाने लगा और राष्ट्रपति रहे मिसाइलमैन डा. अब्दुल कलाम ने भी उनके साथ मिलकर 'सुखी परिवार और समृद्ध राष्ट्र' पुस्तक की रचना की और उनसे अहिंसा की प्रेरणा ली और वे विध्वंसक के बजाए शांति की मिसाईल के लिए तत्पर हो गए थे। उनकी उत्तर आधुनिक सोच 'भविष्योन्मुखी पोषणक्षम विकास' के लिए प्रेरणा है। वे कहते हैं, पोषणक्षम विकास के लिए ऊर्जा का न्यूनतम प्रयोग हो, शारीरिक श्रम को महत्त्व मिले, वस्तुओं का मिताहरण हो तथा स्वैच्छिक सादगी और संयम को बढावा दें। सभ्यताओं के बीच संघर्ष टालने एवं अन्तर्राष्ट्रीय संवाद स्थापित करने के लिए उन्होंने जो पहल की, उसकी छाप संयुक्त राष्ट्र में लिए गए निर्णयों में भी स्पष्ट परिलक्षित होती है। प्रो. नलिन के. शास्त्री ने आचार्य महाप्रज्ञ को अलौकिक चेतना पुरुष की संज्ञा देते हुए उनके जीवन में प्रज्ञा व योग के संतुलन, तपस्या की प्रतिबद्धता, जैन योग के प्रतिपादक, प्रेक्षाध्यान के प्रवर्तक बताते हुए आंतरिक चेतना की विशुद्धि पर केन्द्रित रहते हुए भी वैश्विक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करने वाला अद्वितीय चिन्तक बताया। प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन के विभिन्न अविस्मरणीय प्रसंगों को प्रस्तुत किया तथा उनके बचपन से लेकर अल्पायु में दीक्षा की दृढता, मुनि नथमल बनने और फिर महाप्रज्ञ व युवाचार्य से आचार्य बनने का सफर विश्लेषित किया। उन्होंने महाप्रज्ञ की पुस्तकों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि महावीर का अर्थशास्त्र, महावीर का स्वास्थ्य शास्त्र, लोकतंत्र व समाज शास्त्र, वाक्य रचना शैली, दर्शन की पुस्तकें आदि विचार दर्शन पढ़ने से उनकी हर विषय में विशेषज्ञता प्रकट होती है। कार्यक्रम में डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने भी महाप्रज्ञ के जीवन प्रसंगों पर प्रकाश डाला और उनकी महावीर की साधना पद्धति और जीवन विज्ञान की शिक्षा पद्धति के बारे में बताया। कार्यक्रम में छात्राओं हर्षिता पारीक, स्मृति कुमारी व निधि दौलावत ने भी आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन व विचारों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बीएल जैन ने किया तथा अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया।

शासन माता साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा की स्मृति सभा आयोजित

तेरापंथ धर्मसंघ की साध्वीप्रमुखा साध्वी कनकप्रभा की स्मृति सभा का आयोजन 21 मार्च को यहां संस्थान के सेमिनार हॉल में किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस स्मृति सभा में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने शोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि शासन माता सरलमना, उदारमना, अप्रतिम संतोष और धैर्य की प्रतिरूप थी, उन्होंने अनासक्त भाव से शरीर का त्याग किया और निर्द्वन्द्व भाव से निर्लिप्त होकर निर्विकार रूप में संसार को छोड़ दिया। उनके जीवन में आचार्य भिक्षु की दिव्य शक्ति और आचार्य तुलसी की वात्सल्यमय निर्मलता थी। उनमें हर कार्य को सफलता पूर्वक पूरा करने की उत्कृष्टता समाहित थीं। वे लेखन में निष्णात व संवेदनशील थीं। उनकी लेखनी ने कभी विराम नहीं लिया। वे निरंतर लिखती रही, उनकी प्रखर साहित्य साधना रही। सरगम, यात्रा ग्रंथ, आचार्य तुलसी की आध्यात्मिक यात्रा के 50 वर्ष आदि पुस्तकों के अलावा बहुत सी मैगजीन्स में भी उनकी रचनाओं को स्थान मिलता रहा है। उन्होंने समूचे साध्वी समाज और नारी समाज का मार्ग प्रशस्त किया। कार्यक्रम में सभी ने दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा के लिए प्रार्थना की। कार्यक्रम का संचालन प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. बी.एल. जैन, राकेश कुमार जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. पुष्पा मिश्रा, डॉ. अमिता जैन, डॉ. लिपि जैन एवं पूरा स्टाफ उपस्थित थे।

महावीर जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

अगर महावीर को नहीं चुना तो महाविनाश निश्चित है- प्रो. दूगड़

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि आज विश्व के समक्ष दो ही विकल्प हैं कि या तो महावीर को चुना जाए अथवा महाविनाश को। महावीर को नहीं चुने जाने पर यह महाविनाश स्वतः ही निश्चित हो जाता है। आज महावीर को चुनना अनिवार्य बन चुका है। वे यहां महाश्रमण ऑडिटोरियम में महावीर जयंती के अवसर पर 13 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि परस्पर-निर्भरता और सहअस्तित्व के लिए जरूरी है कि हम महावीर के सिद्धांतों को अपनाएं। उन्होंने आत्मा की स्वतंत्रता, समानता और सापेक्षता का जो सिद्धांत दिया, उसके अनुरूप सहअस्तित्व आवश्यक हो जाता है। जैन धर्म के तीर्थंकरों ने शांति और अहिंसा की आवश्यकता प्रतिपादित की, जबकि वे सभी क्षत्रिय थे, जो युद्ध लड़ने वाले होते हैं, फिर भी आत्मज्ञान प्राप्ति का मार्ग चुना, क्योंकि युद्ध और उनके परिणाम तथा अतिवाद देखने के बाद ही महावीर क्षत्रिय से तीर्थंकर बने।

प्रो. दूगड़ ने जीवन में परिवर्तन के लिए और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ का महत्त्व बताया तथा कहा कि जीवन में संयम का महत्त्व होता है। संयम भगवान महावीर का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। संयम से ही शांति और पर्यावरण का संरक्षण संभव है। संयमित जीवन शैली बनने पर इन सबकी प्राप्ति हो जाती है। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथि प्रो. नलिन के. शास्त्री ने महावीर के राजकुमार के रूप में जन्म लेने और बाद में साधना द्वारा महावीर के रूप में उनके आविर्भाव का विवरण प्रस्तुत करते हुए तीर्थंकर महावीर की विशेषताओं का वर्णन किया और बताया कि महावीर के उपदेशों से व्यक्ति अपने जीवन के अंधकार को दूर कर सकता है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि युद्ध के समय हमें महावीर के सिद्धांत और अहिंसा की याद आती है। आज की स्थिति में पूरे विश्व के सामने केवल भारत ही शांति का मार्ग प्रशस्त करने में सक्षम है। कार्यक्रम में प्राकृत व संस्कृत विभाग के डा. सत्यनारायण भारद्वाज, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, अहिंसा व शांति विभाग के डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ तथा छात्राओं में ममता बोहरा, पूजा चौधरी, हर्षिता पारीक व पवित्रा ने अपने विचार वक्तव्य एवं गीतों के माध्यम से रखे। कार्यक्रम का संचालन अच्युतकांत जैन ने किया। अंत में डा. आलोक कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया।

गांधी और महाप्रज्ञ ने वैश्विक समस्याओं का अहिंसापरक समाधान दिया- कुलपति

'विकास : महात्मा गांधी व आचार्य महाप्रज्ञ दृष्टि' पुस्तक का विमोचन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्या डा. लिपि जैन लिखित पुस्तक 'विकासः महात्मा गांधी व आचार्य महाप्रज्ञ दृष्टि' का विमोचन 26 अप्रेल को समारोहपूर्वक किया गया। पुस्तक का विमोचन करते हुए कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि महात्मा गांधी और आचार्य महाप्रज्ञ देश की दो ऐसी महान हस्तियां रहीं, जिन्होंने अहिंसा एवं शांति के साथ बेरोजगारी के उन्मूलन, स्वावलम्बन, चरित्र निर्माण, नैतिकता और वैश्विक समस्याओं के समाधान की दिशा में पर्याप्त कार्य किया था। विश्व-पटल पर सदैव उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका सदैव रही और आज भी उनकी विचारधारा का अनुकरण किया जाता है। उन दोनों महापुरुषों की विकास की अवधारणा को लेकर इस पुस्तक में तुलनात्मक चिंतन किया गया है। डॉ. लिपि जैन ने पुस्तक की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए बताया कि इसमें छह अध्यायों में विकास की अवधारणा और व्यावहारिकता को महात्मा गांधी और आचार्य महाप्रज्ञ के विचारों के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में वर्तमान आधुनिक अर्थशास्त्र और जीवन शैली, गांधी व महाप्रज्ञ के सात्विक चिंतन, गांधीवादी दृष्टि से विनाश रहित विकास, आचार्य महाप्रज्ञ की विकास की परिकल्पना सापेक्ष अर्थशास्त्र और जीवनशैली उन्नत बनाने के उपाय, वर्तमान भारतीय परिप्रेक्ष्य में उपभोक्तावादी प्रवृत्ति से बाहर निकलने के उपाय आदि पर विवेचन किया गया है। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. दूगड़ के अलावा प्रो. नलिन के. शास्त्री व प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी भी मंचस्थ रहे। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बीएल जैन ने किया और अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया।

नववर्ष पर समारोह का आयोजन

हमेशा बड़ा सोचें, पहले सोचें और सोचने के बाद निरन्तर प्रयास करें- कुलपति

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि हमेशा बड़ा सोचें, पहले सोचें और सोचने के बाद निरन्तर प्रयास करें। बाधाओं के मार्ग में आने पर घबराएं नहीं। सफलता के लिए यही सूत्र काम करता है। सफलता मिलने पर दुनिया आपको जानती है और असफलता मिलने पर आप दुनिया को समझ जाते हैं। सफलता व असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। प्रयत्न सदैव पूरी लगन से करना चाहिए। कमजोरी और कमियों को दूर करने में अपनी पूरी ताकत झोंक दें, चलना अनवरत जारी रखें, तभी लक्ष्य तक पहुंच पाएंगे। 1 जनवरी को यहां सेमिनार हॉल में आयोजित नववर्ष समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि गत वर्ष में कुछ गलतियां होती हैं, तो अनेक उपलब्धियां भी होती हैं। हमें गलतियों को नहीं दोहराने और उपलब्धियों को सतत बढाने का संकल्प लेना चाहिए। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन, अंग्रेजी विभाग की प्रो. रेखा तिवाड़ी, प्रो. दामोदर शास्त्री, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, समाज कार्य विभाग की डॉ. पुष्पा मिश्रा,

अहिंसा एवं शांति विभाग के डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, प्राकृत व संस्कृत विभाग के डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के डॉ. आलोक जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत आदि ने भी अपने विचार व्यक्त करते हुए शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। कार्यक्रम के पश्चात् सामूहिक भोज का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सभी शैक्षिक एवं अशैक्षणिक कार्मिक उपस्थित थे।

देश भर से आए प्रेक्षाध्यान शिविरार्थियों ने किया दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का अवलोकन

यहां जैन विश्व भारती स्थित आचार्य तुलसी अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान केन्द्र में प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में चल रहे अष्टदिवसीय शिविर के शिविरार्थियों ने 7 मार्च को संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का अवलोकन किया और निदेशक से भेंट करके विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं परीक्षाओं व व्यवस्थाओं आदि की जानकारी प्राप्त की। इनमें देश के विभिन्न स्थानों मुम्बई, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, चिकमंगलूर, अहमदाबाद, सूरत, रायपुर, इन्दौर एवं अन्य स्थानों प्रतिभागी शामिल थे। इन्हें निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इन्हें बताया कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि दूरस्थ शिक्षा में सम्पर्क कक्षाओं से व्यावहारिक ज्ञान भी प्रदान किया जाता है। सहायक निदेशक पंकज भटनागर ने प्रेक्षाध्यान शिविर के इन शिविरार्थियों को दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों व उनकी परीक्षाओं व केन्द्रों आदि की जानकारी प्रदान की।

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग के अध्यक्ष ने किया दौरा

राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग के अध्यक्ष जस्टिस नरेन्द्र कुमार जैन ने 23 फरवरी को संस्थान का अवलोकन करके विश्वविद्यालय की सराहना की है। उन्होंने यहां की शिक्षा व्यवस्था और अनुशासन को श्रेष्ठ बताया तथा कहा कि जैन आचार्यों के अनुशासन में यहां का संचालन बेहतरीन ढंग से किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सुदूर ग्रामीण अंचल में विश्वविद्यालय के संचालन का कार्य दुरूह होता है, इसके बावजूद इस बात की खुशी है कि यहां इतनी सुन्दर व्यवस्थाओं के साथ शानदार विश्वविद्यालय संचालित किया जा रहा है।

उन्होंने यहां विजीटर्स बुक में अपने कमेंट्स में लिखा- मुझे जेवीबीआई में आकर बेहद खुशी हुई है। मैं कामना करता हूं कि चौबीस तीर्थंकर और सभी जैन संत इस विश्वविद्यालय और शैक्षणिक संस्थान के संस्थापकों के लक्ष्यों की पूर्ति के लिए संचालकों के मन-मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करेंगे। उन्होंने यहां आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय, वर्द्धमान ग्रंथागार केन्द्रीय पुस्तकालय, आर्ट गैलरी, डिजीटल स्टुडिया, कम्प्यूटर लैब एवं लैंग्वेज लैब, विभिन्न विभाग और उनकी प्रयोगशालाएं, जिम आदि के साथ आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग का अवलोकन किया। इससे पूर्व कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनको प्रतीक चिह्न, साहित्य, पट्ट आदि प्रदान करके सम्मान किया। कुलपति ने विश्वविद्यालय की व्यवस्थाओं, यहां के मनोरम व आध्यात्मिक वातावरण, भौगोलिक स्थिति, अनुशासन, विभिन्न विभागों, पाठ्यक्रमों आदि की जानकारी प्रदान की। इस दौरान उनके साथ कुलपति प्रो. दूगड़ के अलावा प्रो. नलिन के. शास्त्री, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

विश्व योग दिवस पर सामुहिक योगाभ्यास

योग मनुष्य मात्र में परस्पर प्रेम व सौहार्द्र की भावना का संचार करता है- कुलपति

विश्व योग दिवस के अवसर पर 21 जून को संस्थान के महाप्रज्ञ सभागार में समस्त कार्मिकों द्वारा सामुहिक योगाभ्यास किया गया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने सम्बोधन में कहा कि सम्पूर्ण विश्व के देशों में एक साथ योगाभ्यास किया जा रहा है। योग भावों का परिष्कार करता है और मैत्री भाव का विकास करता है। योग मनुष्य मात्र में परस्पर प्रेम व सौहार्द्र की भावनाओं का संचार करता है। योग से समस्त विश्व के देशों में शांति और अहिंसा का संदेश प्रसारित हो रहा है। योग की विभिन्न क्रियाएं व्यक्ति को केवल शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि मानसिक, भावात्मक और आत्मिक दृष्टि से भी परिष्कृत करती है। इस अवसर पर योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने ध्यान, प्राणायाम और यौगिक क्रियाओं के क्लिनिकली और प्रयोगशालीय प्रयोगों और उनके प्रभावों के बारे में बताया। डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने विभिन्न योगासन, प्राणायाम और यौगिक क्रियाओं के अभ्यास में सहायता प्रदान की। इस कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, उप-कुलसचिव विनीत सुराणा, विजय कुमार शर्मा, मोहन सियोल, पंकज भटनागर, महिमा जैन, डॉ. जे.पी. सिंह, दीपाराम खोजा, शरद जैन, राजेन्द्र बागड़ी, डॉ. वीरेन्द्र भाटी मंगल, रामनारायण गैणा, प्रकाश गिड़िया, दीपक माथुर, अजय पारीक, अमीलाल चाहर, घासीलाल शर्मा आदि ने उपस्थित रह कर योगाभ्यास किया।

बढ़ती जा रही है राज्य में संस्थान के शिक्षित योग प्रशिक्षकों की मांग

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग से शिक्षित-प्रशिक्षित विद्यार्थियों के सामने लगातार कॅरियर के द्वार खुल रहे हैं। विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने बताया कि हाल ही में राज्य सरकार ने सभी जिलों में योग इंस्ट्रक्टर के पदों पर भर्ती की है, जिसमें समस्त पदों के 60 प्रतिशत से अधिक स्थानों पर जैविभा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इनमें नागौर जिले में यह संख्या 80 प्रतिशत है। डा. शेखावत ने बताया कि नागौर जिले में हर तहसील में पार्टटाईम योग इंस्ट्रक्टर लगाए गए हैं, जिनमें कुल 40 पदों में से 35 पदों पर जैविभा के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों का चयन किया गया है। इसी प्रकार राज्य के अन्य सभी जिलों में भी यही स्थिति रही है। राज्य के आयुर्वेद विभाग ने भी चयनित ग्राम पंचायत स्तर पर योग प्रशिक्षकों को नियुक्त किया है।

लाडनूं तहसील की दो ग्राम पंचायतों में भर्ती की गई है, जिनमें सभी जैविभा विश्वविद्यालय से शिक्षित योग प्रशिक्षक हैं। उन्होंने बताया कि इसी प्रकार केन्द्रीय विद्यालयों में लगे योगा टीचरों में भी यहां से शिक्षित विद्यार्थी शामिल हैं।

नौ दिवसीय कौशल विकास कार्यशाला आयोजित

वर्तमान में कम्प्यूटर व आईटी हर व्यक्ति के लिए जरूरी- सुराणा

संस्थान में कौशल विकास कार्यक्रम के तहत कर्मचारियों को कम्प्यूटर, विभिन्न कम्प्यूटर सोफ्ट-वेयर्स एवं इंफॉर्मेशन टेक्नोलोजी के सम्बंध में पारंगत करने के लिए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 5 मई से 13 मई तक नौ-दिवसीय कार्यशाला संचालित की गई। उपकुलसचिव विनीत सुराणा ने कार्यशाला के प्रारम्भ पर बताया कि वर्तमान समय अक्षर-ज्ञान के स्थान पर कम्प्यूटर और आईटी का युग है, जिसमें अगर व्यक्ति कितना ही पढा-लिखा हो, लेकिन कम्प्यूटर में कुछ नहीं जानता, तो वो निरक्षर के समान ही है। विश्वविद्यालय के प्रत्येक व्यक्ति को केवल कम्प्यूटर साक्षर होना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे अपने कार्य में रोजमर्रा काम आने वाले सभी प्रोग्राम में पारंगत होना भी जरूरी है। उन्होंने बताया कि यह काफी आसान है, केवल झिझक दूर होनी जरूरी है। रूचि रखने पर नौ दिनों की इस कार्यशाला अवधि में सभी यहां सीखी जाने वाली समस्त तकनीक में कामयाब हो पाएंगे।

कार्यशाला में कम्प्यूटर टैक्नो-लोजी से अज्ञ रहे कार्मिकों को एमएस एक्सेल, एमएस पावर पॉइंट, हिन्दी यूनिकोड एवं इंग्लिश टाईपिंग, गूगल मीट व जूम आदि वीडियो कांफ्रेंसिंग प्लेटफार्म, गूगल फॉर्म आदि की जानकारी देकर उन्हें कम्प्यूटर दक्ष बनाया गया। कार्यशाला में 25 कार्मिकों ने हिस्सा लिया।

बुद्ध पूर्णिमा कार्यक्रम का आयोजन

बुद्ध ने मानव मात्र को एक नई दिशा दी थी- प्रो. त्रिपाठी

''संयम आचार का मूल है। सुख प्राप्ति के लिए एकमात्र संयम का ही मार्ग है। विवेकपूर्वक गति करने को संयम कहते हैं। सबको संयम के मार्ग पर चलना चाहिए। न अधिक लगाव होना चाहिए और न अधिक विरोध किया जावे।'' ये विचार वयोवृद्ध विद्वान् प्रो. दामोदर शास्त्री ने यहां बुद्ध पूर्णिमा के उपलक्ष में 14 मई को आयोजित कार्यक्रम में कहे। उन्होंने कहा कि महात्मा बुद्ध ने जो दर्शन व आचार दिया, उसमें जो करूणा, अहिंसा, अनुकम्पा, मैत्री तत्त्व हैं, वे लगभग सभी धर्मों में निहित हैं। सभी दर्शनों का लक्ष्य एक ही होता है। सबको सुख चाहिए। सारी भिन्नताओं के बाद भी सुख सभी को चाहिए। सुख प्राप्ति के लिए सबके रास्ते अलग-अलग हैं, पर लक्ष्य एक ही है। महात्मा बुद्ध ने निर्वाण का मार्ग बताया, जो पूर्णता की स्थिति है।

कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि बुद्ध ने मानव मात्र को एक नई दिशा दी थी। वे अतिभोग और अतियोग दोनों को नहीं करने और मध्यम मार्ग अपनाने की प्रेरणा देते थे। 40 वर्षों तक उन्होंने भ्रमण किया और लोगों को उपदेश दिए। इस बीच अपने ज्ञान व उपदेश से अनेक लोगों के हृदय परिवर्तन भी किए। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि बुद्ध ने बताया था कि सारा संसार दुःखों से भरा हुआ है। उन्होंने 4 आर्य सत्य बताए, जिनमें दुःख, दुःख की प्रवृत्ति, दुःख की उत्पत्ति और दुःख निवारण का मार्ग शामिल हैं। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि बुद्ध ने दुःख निवारण के लिए 8 अंग बताए थे। इन आठ अंगों में सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वचन, सम्यक् कर्म, सम्यक् आजीविका, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि शामिल हैं। इस अष्टाहिनक आर्यमार्ग को सिद्ध कर मुक्त हुआ जा सकता है। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने कहा कि पूरी दुनिया बुद्ध के विचारों से प्रभावित है। उनके बताए जीवन दर्शन का अनुसरण करना चाहिए। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने बुद्ध के योग व ध्यान की प्रक्रिया का वर्णन किया और जीवन उद्धार के उनके मार्ग को बताया। अंत में डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारीलाल शर्मा ने किया। कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन, डॉ. आभासिंह, श्वेता खटेड़, प्रमोद ओला, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. भाबाग्रही प्रधान, डॉ. विनोद सैनी, डॉ. विनोद सियाग, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. सरोज राय, जगदीश यायावर आदि एवं छात्राएं उपस्थित रही।

परम्पराओं को आधुनिक परिवेश के अनुरूप प्रस्तुत करें- प्रो. अनेकांत

'आधुनिक युग में श्रावकाचार' पर व्याख्यान प्रस्तुत

आचार्य महाप्रज्ञ प्रज्ञा सवंर्द्धिनी व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग के प्रोफेसर डॉ. अनेकांत जैन ने 'आधुनिक युग में श्रावकाचार' विषय पर 11 मई को अपने व्याख्यान में कहा कि आमतौर पर माना जाता है कि जैन दर्शन में लोग केवल खाने-पीने के नियमों से ही बंधे हुए होते हैं, जो सही नहीं है। जैन दर्शन की आचार-मीमांसा केवल खाने-पीने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि श्रावक के 12 व्रतों में से बहुत कम का सम्बंध खाने-पीने से हैं। 6 आवश्यक आचारों में भी खाने-पीने से मात्र 2 से ही सम्बंध हैं और वे भी पूर्ण नहीं हैं। जैन दर्शन की आचार मीमांसा के कारण ही समस्त जैनों को सभ्य समाज कहा जाता है। वे यहां संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के तत्वावधान में आयोजित वार्षिक व्याख्यानमाला में अपना व्याख्यान प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि संसार के दुःख का नाश करना ही श्रावकाचार का मुख्य कर्तव्य होता है। हम परम्परा और विकास के अन्तर्द्वन्द्व से जूझ रहे हैं, इसलिए जरूरत है कि हम अपनी परम्पराओं को आधुनिक परिवेश के अनुरूप प्रस्तुत करें। हमें मर्यादा के भीतर रहकर ही अहिंसा आदि सिद्धांतों का पालन करना होगा, जो मर्यादा छोड़ कर संभव नहीं है। हम अपने दिग्व्रत और देशव्रत को भूलते जा रहे हैं। हमें मोक्षशास्त्र व समाजशास्त्र में संतुलन बैठाकर चलने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि दर्शन को समाज से अलग नहीं किया जा सकता है। श्रावकाचार को मुनि बनने का अभ्यास और श्रमणाचार को उद्देश्य बताते हुए उन्होंने कहा कि श्रावकाचार की नींव पर ही श्रमणाचार टिका है। कार्यक्रम का प्रारम्भ आकर्ष जैन के मंगलाचरण से किया गया और प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अंत में प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अच्युतकांत जैन ने किया।

अपरिग्रह के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान में स्व. पूनमचंद भूतोड़िया व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 3 जून को आयोजित एक दिवसीय व्याख्यान में एमेरिट्स प्रोफेसर प्रो. सुषमा सिंघवी ने 'अपरिग्रह का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण' विषय पर कहा कि वस्तुओं का संग्रह करने से हम उन वस्तुओं की गुलामी की ओर बढ़ते हैं और पदार्थों की गुलामी ही दुःख का कारण होता है। वस्तुओं की प्राप्ति से कभी सुख नहीं मिल सकता है। इच्छापूर्ति से नहीं बल्कि इच्छाओं का अभाव कर देने से सुख प्राप्त होता है। संस्थान के जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के अन्तर्गत संचालित महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ द्वारा आयोजित इस वार्षिक व्याख्यानमाला में प्रो. सिंघवी ने कहा कि तेरा और मेरा की भावना बचपन से ही पनपने लगती है, जिसे परिवार और समाज में बल मिलता है। विज्ञापनों के कारण भी व्यक्ति में वस्तुओं को चाहने की भावना बलवती हो जाती है। परिग्रह के पीछे वर्तमान से असंतोष और भविष्य का लोभ होता है। परिग्रह इकट्ठा करके जीव अपने को सुरक्षित महसूस करता है, जबकि ऐसा होता नहीं है। जरूरतों को पूरा करना तो उचित कहा जा सकता है, लेकिन इच्छाओं के जाल में फंसना गलत है। हमें परिग्रह के त्याग की ओर बढ़ना चाहिए। स्वेच्छा से अपने पास कम रखना और लोभ नहीं करना तथा दूसरों के लिए भी छोड़ देने की भावना को पनपाने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति में 100 हाथों से कमाने और 1000 हाथों से दान करने की बात आती है, जो अपरिग्रह का प्रतीक ही है। संयोजक प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अंत में अपरिग्रह के सिद्धांत को जीवन में अपनाने पर बल देते हुए आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अच्युतकांत जैन ने किया।

आचार्य तुलसी श्रुत संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला आयोजित

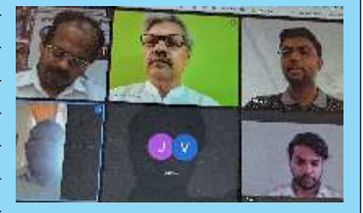

श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली के जैन दर्शन विभाग के प्रोफेसर डॉ. वीरसागर जैन ने कहा है कि जैन दर्शन केवल मुक्ति का साधन नहीं है, बल्कि यह लौकिक जीवन को सुधारने और उसे अच्छा बनाने का माध्यम भी है। वे यहां संस्थान के जैन एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के अन्तर्गत महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में 4 मई को आचार्य तुलसी श्रुत संवर्द्धिनी व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित एक दिवसीय व्याख्यान में बोल रहे थे।

'जैन दर्शन की व्यावहारिकता' विषय पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जैन दर्शन जबरदस्त है, इसमें कुछ भी जबरदस्ती नहीं है। जैन जीवन शैली जीवन को शुद्ध बनाने और निरोग रखने में भी सहायक है। चरित्र निर्माण, सत्य व अहिंसा के आचरण के कारण जहां जैन समाज के लोग रहते हों, वहां पुलिस व्यवस्था तक की जरूरत नहीं रहती है। देशहित में भी जैन समाज का बहुत योगदान है। इसके द्वारा व्यक्तित्व निर्माण और राष्ट्र निर्माण के सभी कार्य आसान हो जाते हैं। जैन दर्शन का अनेकांत दर्शन हमारी सोच को परिपक्व बनाता है और अन्य दर्शनों को ही नहीं, बल्कि अन्य समस्त चिंतन, स्थितियों, परिस्थितियों और वस्तुओं, विचारों तक को ग्रहण करने और वास्तविकता तक पहुंचने में मदद करता है। व्याख्यान से पूर्व जैन दर्शन के विद्यार्थी पवित्र जैन ने मंगलाचरण किया। दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शोधार्थी अच्युतकान्त जैन ने किया। कार्यक्रम में देश भर के प्रमुख जैन विद्वानों ने हिस्सा लिया।

मासिक व्याख्यानमाला

'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' व्याख्यानमाला में विद्वानों की प्रस्तुतियां

ज्ञान-विज्ञान की अमूल्य निधि है : प्राकृत वाङ्मय- प्रो. वीरसागर

'प्राकृत विद्या जीवन की विद्या है। यह जीवन जीने की एक कला है। प्राकृत वांग्मय इतना व्यापक है कि इसमें जीवन के सभी पहलुओं पर सूक्ष्मता से विचार किया गया है' ये विचार श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रो. वीरसागर जैन संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा 29 जनवरी को मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत आयोजित 'प्राकृत एवं जैनविद्या की व्यापकता' विषयक विशेष व्याख्यान में व्यक्त किये। उन्होंने प्राकृत और जैनविद्या की व्यापकता को दो दृष्टियों से विभक्त करके बताया। प्रथम दृष्टि-विषय के अनुसार, जिसके अन्तर्गत अध्यात्म, धर्म, दर्शन, आचार, न्याय, साहित्यिक तत्त्व, राजनीति, मनोविज्ञान, भूगोल, खगोल आदि तथा द्वितीय दृष्टि विधागत- जिसके अन्तर्गत महाकाव्य, चरितकाव्य, मुक्तककाव्य, पुराण, रासो साहित्य, सूक्ति, टीकाएँ, चूर्णि, शिलालेख, पट्टावलियां आदि परिगणित होती हैं। प्रो. जैन ने इन विषयों से सम्बन्धित अनेक ग्रंथों का परिचय अपने व्याख्यान में प्रस्तुत करते हुए कहा कि कोष की परम्परा प्राकृत से मानी जाती है तथा प्राकृत में अनेक लोक साहित्य की भी सृजना हुई है। प्राकृत वांड्मय का मूल आधार अध्यात्म रहा है, जो भारतीय संस्कृति का भी मूल है। इस व्याख्यान में उन्होंने सरल एवं सुबोध शैली में प्राकृत एवं जैनविद्या की व्यापकता को व्याख्यायित किया। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत एवं संस्कृत की परस्पर पूरकता को बताया तथा इस बात पर भी जोर दिया कि दोनों भाषाएँ ही भारतीय संस्कृति की प्राण हैं। उन्होंने दोनों परम्पराओं के विद्वानों से आह्वान किया कि हमें प्राकृत एवं संस्कृत दोनों भाषाओं का समान रूप से अध्ययन करना चाहिए। कार्यक्रम का प्रारम्भ सह-आचार्या डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा के मंगलाचरण एवं स्वागत भाषण से किया गया तथा समापन पर कार्यक्रम के संयोजक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में सम्पूर्ण देश से लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

भारतीय संस्कृति की परिचायक है प्राकृत भाषा- प्रो. भट्टाचार्य

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत के विभाग के तत्त्वावधान में 'भारत का गौरवः प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 26 फरवरी को आयोजित अष्टम व्याख्यान में बंगाल के विश्व भारती विश्वविद्यालय, शान्तिनिकेतन के संस्कृत, पाली एवं प्राकृत विभाग के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य ने 'प्राकृत भाषा का स्वरूप एवं उसके विविध आयाम' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रो. भट्टाचार्य ने प्राकृत भाषा को भारतीय संस्कृति की परिचायक के रूप में बताते हुए कहा कि प्राकृत भाषा प्राचीनकाल से ही भारत की जनबोली के रूप में प्रचलित रही है। यह भाषा दो रूपों में हमें प्राप्त होती है, प्रथम कथ्य और दूसरा साहित्यिक। दोनों ही रूपों में प्राकृत भाषा बहुत ही समृद्ध भाषा के रूप में रही है। इस भाषा का समय 600 ई. पू. से 1000 ई. तक का माना गया है। प्रो. भट्टाचार्य ने प्राकृत भाषा की उत्पत्ति, उसका विकास एवं इस भाषा में रचित साहित्य का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो. दामोदर शास्त्री ने प्राकृत को जनसामान्य की भाषा बताते हुए आह्वान किया कि इसके विकास में सभी अपना योगदान दें, क्योंकि भाषा बचेगी तो संस्कृति बचेगी। उन्होंने छोटे-छोटे उदाहरणों के माध्यम से इसकी उपयोगिता सिद्ध की। विभाग की सह-आचार्या डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने प्रारम्भ में स्वागत भाषण दिया। कार्यक्रम का शुभारम्भ अच्युतकान्त के मंगलाचरण से किया गया तथा संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में देश भर से 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

भारतीय संस्कृति की धरोहर है : जैनागम - प्रो. धर्मचन्द जैन

भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे प्राचीन संस्कृति रही है और इसकी प्राचीनता को अक्षुण्ण बनाए रखने में जैनागमों का विशेष योगदान रहा है। ये विचार जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 24 मार्च को आयोजित 'जैन आगमों की रचनाशैली' विषयक नवम व्याख्यान में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के सेवानिवृत्त प्रो. धर्मचन्द्र जैन ने व्यक्त किये।

प्रो. जैन ने आगमों की रचना-शैली पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कहा कि आगम की रचना विभिन्न शैलियों में हुई है, जो उनके विषय को भली-भांति से प्रतिपादित करने में सहायक है। उन्होंने कुछ शैलियों का उल्लेख करते हुए सूत्रात्मक शैली, गेयात्मक शैली, प्रश्न-उत्तर शैली, गद्य-पद्य शैली आदि पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने आगमों के वैशिष्ट्य को बताते हुए उनमें वर्णित विषय-वस्तु पर प्रकाश डाला। उन्होंने आगमों को भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर बताया।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने दिया तथा कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 45 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत साहित्य अपार ज्ञान-राशि का भण्डार- प्रो. दीनानाथ शर्मा

प्राकृत साहित्य की परम्परा अत्यन्त प्राचीन मानी गई है। इसमें जीवन से सम्बन्धित विभिन्न आयामों पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। प्राकृत साहित्यिक भाषा होने से पूर्व जनभाषा के रूप में प्रचलित थी। लेकिन तत्कालीन विद्वानों ने प्राकृत भाषा को साहित्यिक भाषा का दर्जा दिलवाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये विचार प्राकृत एवं पाली विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय के विभागाध्यक्ष प्रो. दीनानाथ शर्मा ने जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 30 अप्रैल को आयोजित दशम व्याख्यान में व्यक्त किये।

प्रो. शर्मा ने प्राकृत साहित्य को ज्ञान-राशि का अपार भण्डार बताते हुए, इस साहित्य को विश्व का पथ-प्रदर्शक बताया। अध्यक्षीय वक्तव्य में विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि भारत की आत्मा है- संस्कृत-प्राकृत भाषा एवं साहित्य। उन्होंने इन दोनों भाषाओं में रचित साहित्य के अध्ययन पर जोर दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ जैन दर्शन विभाग के शोधार्थी अच्युतकान्त जैन के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने दिया तथा कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राच्यविद्याओं में महत्त्वपूर्ण है संगीत विद्या- प्रो. जयकुमार उपाध्ये

"भारतीय संस्कृति के स्थायित्व में संगीत विद्या का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे प्राचीन शास्त्र, चाहे वो वेद हों या आगम या अन्य स्वतंत्र शास्त्र हों, इन सबमें संगीत के विषय में यथास्थान वर्णन प्राप्त होता ही है। संगीत ने हमारे जीवन को एक नई परिभाषा दी है।" ये विचार राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं शोध संस्थान के निदेशक प्रो. जयकुमार उपाध्ये ने जैन विश्वभारती संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 28 मई के ऑनलाइन मासिक व्याख्यानमाला के एकादश व्याख्यान के मुख्य वक्ता के रूप में प्रकट किये। उन्होंने इस अवसर पर प्राकृत साहित्य में संगीत विद्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए भगवान महावीर के समवसरण में स्थित वाद्ययंत्रों, संगीतशालाओं की चर्चा की। साथ ही प्राकृत साहित्य में अनेक स्थानों पर वर्णित संगीत विद्या के विषय में ससंदर्भ बताया। उन्होंने स्थानांगसूत्र, प्राकृतरत्नाकर, दृष्टिवाद आदि में वर्णित संगीत विद्या को व्याख्यायित किया तथा संगीत को तनाव, मानसिक व्याधियों तथा अनेक बीमारियों के ईलाज के संदर्भ में व्याख्यायित किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी भारतीय संगीतशास्त्र की महत्ता को प्रतिपादित किया और कहा कि जीवन संगीतमय बने। प्राचीन संगीत पर आधारित फिल्मी गीतों के उदाहरण के माध्यम से उन्होंने संगीत को स्वस्थ रहने का माध्यम बताया। कार्यक्रम का शुभारम्भ शोध छात्र अच्युतकान्त जैन के मंगलाचरण से किया गया। प्रारम्भ में डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 40-45 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

कषाय-विजय एवं तनाव-मुक्ति के सूत्रों को अक्षुण्ण भंडार है प्राकृत साहित्य- डा. शोभना शाह

प्राकृत साहित्य में अध्यात्म के साथ-साथ समसामयिक विषयों पर भी अनेक सूत्रों का गुम्फन प्राप्त होता है। इस साहित्य में कषाय-विजय एवं तनाव मुक्ति के अनेक सूत्र प्राप्त होते हैं। ये विचार 27 जून को संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित 'भारत गौरवः प्राकृत भाषा एवं साहित्य' विषयक ऑनलाईन व्याख्यानमाला के अन्तर्गत विशेष व्याख्यान प्रसतुत करते हुए मुख्य वक्ता गुजरात विद्यापीठ की सहायक आचार्या डा. शोभनाशाह ने प्रस्तुत किए। 'प्राकृत साहित्य में कषाय-विजय एवं तनाव-मुक्ति' विषय पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डा. शाह ने कहा कि आज का युग तनावों सेग्रसित है, लेकिन मनुष्य यदि कषायों पर विजय प्राप्त कर ले तो सभी प्रकार के तनावों से मुक्ति पाई जा सकती है। अध्यक्षीय वक्तव्य में विभागाध्यक्ष डा. दामोदर शास्त्री ने कहा कि ये विषय केवल सुनने के लिए ही नहीं है, बल्कि इसे जीवन में उतारना भी आवश्यक है। व्यक्ति यदि कोशिश करें तो कषायों पर विजय करते हुए इससे मुक्ति प्राप्त की जा सकती है, जो मनुष्य का परम लक्ष्य है। उन्होंने इसके लिए प्राकृत साहित्य के अध्ययन पर बल दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ डा. समणी संगीतप्रज्ञा के मंगलाचरण एवं स्वागत वक्तव्य से हुआ। कार्यक्रम का संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। कार्यक्रम में देश के विभिन्न क्षेत्रें से 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राचीन ज्ञान आधारित शिक्षा को शीर्ष पर पहुँचाने में सफल होगी नई शिक्षा नीति

मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित विभागीय व्याख्यान माला में 12 अप्रेल को सहायक आचार्या डॉ. सरोज राय ने 'नई राष्ट्रीय नयी शिक्षा नीति-2020 तथा शिक्षक व शिक्षा की दशा एवं दिशा' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 भारत की 21वीं सदी की शिक्षक एवं शिक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए बहुप्रतीक्षित, दीर्घकालिक, वैचारिक मंथन-चिंतन, परामर्श का प्रतिफल है। इस नीति में अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में बड़े पैमाने पर परिवर्तनकारी सुधार का विस्तार है।

शिक्षा नीति अध्यापक शिक्षा को समग्र, समेकित, लचीला और कौशल आधारित बनाने की पक्षधर हैं। राष्ट्रीय नयी शिक्षा नीति का सम्पूर्ण शैक्षिकी ढांचा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने, सामाजिक तंत्र को विकसित करने, पाठ्यक्रमों में एकरूपता, समग्रता, भारतीय भाषा को प्राथमिकता तथा प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा को आधार मानकर विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों के माध्यम से बहुविषयक शिक्षा को एकीकृत करके समावेशन करने तथा डिजिटल शिक्षा संसाधनों का प्रयोग,

शिक्षण, प्रशासन मूल्यांकन में प्रयोग करने की बात इसमें कही गयी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की क्रियान्विति से भारत को प्राचीन ज्ञान आधारित शिक्षा को शीर्ष पर पहुंचाने में सफल होगी तथा 5 से 15 वर्ष की आयु के उन बच्चों को तैयार करेगी, जो विश्व पटल पर भारतीय शैक्षणिक परिदृश्य के रूप में दूरगामी प्रभाव डालेंगे, जिससे भारत के भविष्य को नयी दिशा मिलेगी।

विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर समस्त संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान., डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, रजत जैन, डॉ. अजीत पाठक, खुशाल जांगिड़ आदि उपस्थित रहे।

मोटे अनाज का सेवन है प्रकृति के अनुकूल खानपान - डॉ. शेखावत

ईयर ऑफ मिलेट्स पर सेमिनार का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा आयोजित कार्यक्रम के अंतर्गत संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा घोषित कार्यक्रम 'वर्ष 2023: अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज' विषय पर सेमिनार का आयोजन 18 फरवरी को किया गया। योग एवं जीवन विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने सेमिनार में मिलेट्स में वैज्ञानिक तत्त्वों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि हमारे लिए प्रकृति ने अपने रहने के स्थान पर ही हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयुक्त उच्च गुणवत्ता युक्त अनाज उत्पन्न किया है, जिसे वापस अपनाने और अपने आहार में शामिल करने की आवश्यकता है। उन्होंने वर्तमान समय के बदलते परिवेश, जीवन शैली के लिए मोटा अनाज को कैल्शियम युक्त, उच्च पोषण वाला चामत्कारिक अनाज बताया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने मोटा अनाज को स्वास्थ्य के लिए लाभदायक बताया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमें अपनी दिनचर्या में मोटे अनाज युक्त और चोकर युक्त भोजन को शामिल करना चाहिए। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. सरोज राय ने कहा कि 'अंतर्राष्ट्रीय ईयर ऑफ मिलेट्स' समर्थित संकल्प का उद्देश्य वैश्विक जागरूकता, खाद्य सुरक्षा, पोषण, आजीविका को सुरक्षित करना, किसानो की आय बढ़ाना, गरीबी उन्मूलन और सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में योगदान देने के दृष्टिकोण से प्रभावी है। कार्यक्रम का आयोजन ऑफलाइन व ऑनलाइन दोनों मोड पर किया गया। ऑनलाइन 100 और ऑफलाइन में 34 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

नववर्ष कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 1 जनवरी को नववर्ष पर ऑनलाईन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि नववर्ष सकारात्मक ऊर्जा से ओतप्रोत करता है। डॉ. बी. प्रधान ने कहा कि नववर्ष हमें आगे बढ़ने की, कुछ नया करने की सीख देता है। डॉ. सरोज राय एवं छात्रा अनिता ने कविता के माध्यम से अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम में संकाय सदस्यों के साथ 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया।

मातृभाषा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

शिक्षा विभाग में 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने कहा कि मातृभाषा सृजनशीलता, रचनावाद, स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कौशल विकास, बौद्धिक विकास, सांस्कृतिक सबलता, सीखने- सिखाने की प्रचुरता से ओतप्रोत होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में इसके संरक्षण, प्रचार, प्रसार आदि पर विशेष बल दिया गया है। हमारा दायित्व बनता है कि मातृभाषा की सुरक्षा व विस्तार करें। कार्यक्रम में विभाग की छात्राओं ने अपने विचार रखते हुए मातृभाषा को भावना, संस्कार और संस्कृति से जुड़ी बताया। कार्यक्रम में 70 छात्राएं उपस्थित रहीं।

फ्रेशर पार्टी में नृत्य, गीत प्रतियोगिताओं का आयोजन

फ्रेशर महोत्सव का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 12 फरवरी को आयोजित फ्रेशर पार्टी का आयोजन करके नव आगन्तुक विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय की परम्परा व शिक्षाओं से परिचित करवाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यहां कॅरियर के साथ कैरेक्टर निर्माण पर पूरा जोर दिया जाता है। यह विश्वविद्यालय अपने अनुशास्ताओं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ और अब आचार्य महाश्रमण की ऊर्जाओं से संचालित है। यहां व्यवहार में अध्यात्म को शिक्षा के

साथ सम्बद्ध किया गया है। उन्होंने बताया कि यहां शिक्षा विभाग में दी जाने वाली शिक्षा को पूरे प्रांत और देश भर के शिक्षाविद् बेहतरीन और अनुकरणीय मानते हैं। उन्होंने नवागन्तुक विद्यार्थियों को यहां की व्यवस्थाओं, मर्यादाओं के पालन के साथ जीवन मूल्यों की जीवन में रक्षा करने व उन्हें आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित करते हुए छात्राओं को अनुशासन, प्रोत्साहन और प्रेरणाएं प्रदान की और आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में छात्राओं द्वारा बनाई एक डोक्युमेंटरी फिल्म भी प्रस्तुत की गई, जिसमें विश्वविद्यालय के भ्रमण में आर्ट गैलरी की कला का प्रदर्शन किया गया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

कार्यक्रम में विभिन्न प्रति-योगिताओं के बाद परिणाम घोषित करते हुए मिस फ्रेशर के लिए साक्षी शर्मा का चयन करके सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। इसी प्रकार मिस दिवा के रूप में मोनिका सोनी का और मिस यूनिक के रूप में अभिलाषा शर्मा का चयन करके उन्हें भी सम्मानित व पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम में सुनीता, उर्मिला, सपना, प्रीति, मल्लिका जोशी, शोभा भोजक आदि ने विभिन्न गीतों पर नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। दिव्या पारीक ने गिटार पर गीत प्रस्तुत किया। अभिलाषा स्वामी, निशा स्वामी, दिव्या पारीक आदि ने गीत प्रस्तुत किए। निकिता पटेल ने अपने बीते दिनों को याद करते हुए स्कूल जीवन पर प्रकाश डाला। मिस फ्रेशर आदि के लिए चयन सम्बंधी विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें कैट वॉक करना, टॉफियों से लक्ष्य पर निशाना लगाना, अपने आप की परिचयात्मक प्रस्तुति देना, अपनी रूचि के अनुसार नृत्य, गीत, स्पीच, एक्टिंग आदि प्रस्तुत करने और लॉटरी में निकला कार्यक्रम प्रस्तुत करना शामिल था। निर्णायक मंडल में डॉ. लिपि जैन, डॉ. पुष्पा शर्मा व प्रगति चौरड़िया शामिल थीं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में छात्राध्यापिका मोना ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, अभिषेक चारण, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. सरोज राय, अजयपाल सिंह भाटी, डॉ. अभिषेक शर्मा आदि तथा बड़ी संख्या में छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

नेताजी सुभाष चंद बोस जयंती का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 22 जनवरी को नेताजी सुभाष चंद बोस जयंती की आयोजना में प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि प्रबल आत्मविश्वास, आत्मशक्ति, सूझ-बूझ एवं राष्ट्र प्रेम की भावना से ओत-प्रोत नेताजी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व बहुत ही निराला था। नेताजी के जीवन से हमें शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। उन्होंने देशवासियों में विदेशी शासन से मुक्त कराने की भावना और विदेशियों से निडर रहने का साहस जागृत किया था। उन्होंने कहा कि नेताजी जवानों में प्राण फूंकने वाले थे और वे कहते थे, ''अपनी ताकत पर भरोसा करो, उधार की ताकत तुम्हारे लिए घातक है।'' कार्यक्रम में 60 विद्यार्थियों ने भाग लिया। संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

आचार्य महाश्रमण रचित 'सुखी बनो' पुस्तक की समीक्षा

संस्थान के शिक्षा विभाग में 29 जनवरी को आतंरिक व्याख्यानमाला के अंतर्गत डॉ. अमिता जैन ने आचार्य महाश्रमण द्वारा रचित पुस्तक 'सुखी बनो' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुए कहा कि भारतीय वाङ्मय के दो महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ हैं- श्रीमद्भगवत गीता और उत्तराध्ययन। दोनों ग्रंथों की अनेक बातों में समानता के दर्शन होते हैं। श्रीमद् भगवत गीता संस्कृत एवं उत्तराध्ययन प्राकृत भाषा का ग्रन्थ है। संस्कृत एवं प्राकृत दोनों ही भाषाएँ भारतीय तत्त्व विद्या की दृष्टि से, भारतीय संस्कृति और विचारधारा की दृष्टि से, भारतीय वाङ्मय की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। दोनों ही ग्रन्थ भारतीय वाङ्मय की महान् संपदाएं हैं। आचार्यश्री कहते हैं कि ज्ञान कहीं से भी मिले, हमें प्राप्त कर लेना चाहिए। श्रीमद्भगवत गीता में वर्णित तीन प्रकार की हिंसाओं - आरम्भजा हिंसा, प्रतिरोधजा हिंसा और संकल्पजा हिंसा को आचार्यश्री ने सटीक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया है। पुस्तक में आचार्यश्री कहते हैं कि जो व्यक्ति समता, स्वानुशासन, जीवन जीने की कला आदि को जानता है, तो वह सुखी बनता है। पुस्तक में मोह, राग, भय, क्रोध, आसक्ति आदि से छुटकारा पाने के उपाय भी वर्णित हैं। हमारे जीवन में तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं- इंद्रियां, मन और बुद्धि। इसको अनेक उदाहरणों द्वारा स्पष्ट किया गया है। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अपने विचार प्रस्तुत करते हुए अंत में आभार ज्ञापन किया।

'हमारा ग्रह, हमारा स्वास्थ्य' थीम पर मनाया विश्व स्वास्थ दिवस

संस्थान के शिक्षा विभाग में 7 अप्रेल को विश्व स्वास्थ्य दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि हर साल आयोजित किए जाने वाले विश्व स्वास्थ्य दिवस थीम इस वर्ष 'हमारा ग्रह, हमारा स्वास्थ्य' थीम रखी गई है। जितना हम प्रकृति का संरक्षण तथा संवर्धन करेंगे, उतने ही स्वस्थ रह पायेंगे। पेड़-पौधों का दोहन, धरा को विकृत और गंदा करने का प्रयास हमें विनाश की ओर ले जाते हैं। खाद्य वस्तुओं में मिलावट, नशीले पदार्थों का सेवन, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू आदि का उपयोग अधिक बढ़ने से शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के बजाए प्रकृति के साथ स्नेहपूर्ण रिश्ता व व्यवहार अपनाना चाहिए। प्रो. जैन ने बताया कि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने 'वेदों की ओर लौटने और प्रकृति की ओर वापिस चलने की नीति की बात कही थी। उसे अपनाने और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक, सात्विक और संयमित भोजन, भ्रमण, योग और गतिविधि आधारित कार्य, स्वच्छ रहने आदि को जीवन का भाग बनाने की आवश्यकता है, तभी पूर्ण स्वस्थ रहा जा सकता है। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारीलाल, अजीत पाठक, खुशाल जांगिड, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. मनीष भटनागर आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

सभी शिक्षालयों में होना चाहिए राम के जीवन का पठन-पाठन- प्रो. जैन

रामनवमी पर्व पर राम को सब धर्मों के लिए अनुकरणीय बताया

संस्थान के शिक्षा विभाग में रामनवमी पर्व पर 9 अप्रेल को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि भगवान श्रीराम के जन्म रामनवमी का पर्व 9 दिनों तक फलाहारी व्रत या एकासन व्रत के भोजन के बाद आता है। मौसम परिवर्तन के समय इस प्रकार की साधना-उपासना शारीरिक रोगों को दूर करने, मानसिक विकारों से छुटकारा दिलाने, सांवेगिक संतुलन को बढ़ाने, नैतिक एवं चारित्रिक गुणों की प्रबलता को मजबूत करने, सामाजिक सौहार्द, आपसी सद्भावना व सहयोग की भावना को विकसित करने में सहायक होती है। भगवान श्रीराम का जीवन सदैव अनुशासित और मर्यादित रहने से वे मर्यादा पुरुषोत्तम कहलाए। वचनबद्धता के मामले में वे अद्वितीय थे। वर्तमान में सभी शिक्षालयों में अनुशासन और मर्यादाओं के प्रत्यक्ष अनुभव एवं पालन के लिए आवश्यक है कि सभी शिक्षार्थियों को रामायण व अन्य संबंधित कृतियों का पाठ भी अन्य पाठ्यक्रमों के साथ करवाया जाए। इससे समाज में बढ़ रहे वैमनस्य, द्वेष, ईर्ष्या, मूल्यहीनता आदि को मिटाने में सहायता मिलेगी, क्योंकि भगवान श्रीराम का व्यक्तित्व और कृतित्व, उनके विचार निश्चित रूप से युवा पीढ़ी को ओतप्रोत करेंगे। यह पावन पर्व केवल हिंदू धर्म को ही नहीं, अपितु सभी धर्मों के लिए कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, अजीत पाठक, खुशाल जांगिड, डॉ. सरोज रॉय, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. मनीष भटनागर, रजत सुराणा, प्रमोद ओला आदि उपस्थित रहे।

कैंसर की बीमारी रोकने के लिए तम्बाकू से मुक्ति जरूरी

संस्थान के शिक्षा विभाग में 9 फरवरी को तम्बाकू मुक्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि तम्बाकू के सेवन ने समाज में व्यापक रूप ले लिया है, जिसे रोकना आवश्यक हो गया है। तम्बाकू-सेवन को बंद नहीं किए जाने पर अन्य बीमारियों के साथ कैंसर की बीमारी अपना विकराल और मारक रूप धारण कर लेगी। कैंसर की बीमारी का कारण 90 प्रतिशत बीड़ी, सिगरेट, हुक्का, सिगार आदि के सेवन तथा गुटखा, पानमसाला, जर्दा आदि को चबाना होता है। तम्बाकू सेवन से आर्थिक नुकसान के साथ शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक नुकसान भी होता है। किशोरों में इसकी लत बढ़ रही है। उन्हें इसके सेवन से बचाना चाहिए। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग की संकाय सदस्यों के साथ छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

कैरम में कुसुम, चैस में भावना, टेबल-टेनिस में कविता और बैडमिंटन में ममता प्रथम रही

खेलकूद गतिविधियां आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्त्वावधान में साप्ताहिक खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका समारोह पूर्वक समापन 26 फरवरी को किया गया। इन प्रतियोगिताओं के समापन समारोह में डॉ. मनीष भटनागर ने कहा कि ये खेल गतिविधियां विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए लाभकारी होती हैं। डॉ. बी. प्रधान ने कहा कि ये शारीरिक गतिविधियां छात्राध्यापिकाओं के अन्य कार्यों के लिए सहयोगी रहती हैं। इनसे शरीर में स्फूर्ति रहती है तथा मन स्वस्थ रहता है। खेलकूद प्रभारी डॉ. सरोज राय ने सप्ताह भर चलने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं की जानकारी देते हुए उनके परिणामों की घोषणा की। उन्होंने बताया कि खेलकूद प्रतियोगिताओं में रुमाल झपट्टा में प्रथम स्थान सपना और समूह का रहा। द्वितीय स्थान उर्मिला और समूह का तथा तृतीय स्थान पर कुसुम काला और समूह रही। 100 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर मोनिका सैनी, द्वितीय अनीता व तृतीय स्थान पर ममता खीचड़ रही। 200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में अनीता प्रथम, द्वितीय मोनिका सैनी एवं तृतीय ममता खीचड़ रही। कैरम प्रतियोगिता में प्रथम कुसुम काला, द्वितीय सरला एवं तृतीय सपना मीणा रही। चैस प्रतियोगिता में प्रथम भावना चौधरी, द्वितीय दीक्षा स्वामी एवं तृतीय दीक्षा चौधरी रही। टेबल-टेनिस प्रतियोगिता में प्रथम कविता, द्वितीय भावना चौधरी व तृतीय कुसुम काला रही। बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रथम ममता, द्वितीय सपना एवं तृतीय अरुणा रही। समस्त खेल-कूद गतिविधियों में निर्णायक कोच अजय पाल सिंह रहे। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, गिरिराज भोजक, प्रमोद ओला, अजीत पाठक, खुशाल जांगिड़ आदि उपस्थित रहे।

म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता में चंदू कंवर प्रथम तथा लक्ष्मी चौधरी द्वितीय रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में 22 फरवरी को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता आयोजन के शुभारम्भ पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि खेलकूद से शारीरिक व मानसिक ही नहीं, बल्कि सर्वांगीण विकास संभव होता है। शरीर के विभिन्न अंगों के उचित संचालन में खेल बहुत मददगार साबित होते हैं, वहीं व्यक्तित्व विकास में भी खेलकूद का अहम् योगदान होता है। खेलों से अनुशासन की भावना के विकास के साथ चरित्र के निर्माण व नेतृत्व के गुणों के विकास और सद्भावना और ईमानदारी के गुणों का विकास होता है। प्रतियोगिता के प्रथम दिन म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 60 छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। पांच राउंड में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चंदू कंवर रही। द्वितीय स्थान पर लक्ष्मी चौधरी तथा तृतीय स्थान पर नैना बिडियासर रही। म्यूजिकल चैयर के अलावा रुमाल झपट्टा प्रतियोगिता में टीम 'अ' को विजयी घोषित किया गया। प्रतियोगिता का प्रारम्भ सरस्वती पूजन व माल्यार्पण द्वारा किया गया। इस अवसर पर खेलकूद प्रभारी डॉ. सरोज राय ने बताया कि खेलकूद सप्ताह में सप्ताह भर चलने वाली विभिन्न प्रतियोगिताओं में म्युजिकल चेयर, रुमाल झपट्टा, 100 मीटर दौड़, बैडमिंटन, टेबल-टेनिस, शतरंज और कैरम प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जायेगा। इस अवसर पर डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, प्रमोद ओला, डॉ. अजीत पाठक, रजत जैन, खुशाल जांगिड आदि समस्त संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

बसंत पंचमी मनाई गई

संस्थान के शिक्षा विभाग में 5 फरवरी को बसंत पंचमी पर मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ किया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर ने बसंत पंचमी का महत्त्व बताया। डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने संस्कृत में सरस्वती वंदना प्रस्तुत की। डॉ. सरोज राय ने सरस्वती वंदना प्रस्तुत की।

छात्राओं ने भी बसंत पंचमी पर्व पर अपने विचार एवं सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। डॉ. आभासिंह ने सरस्वती वंदना और बसंत पंचमी और विद्यार्थियों के जीवन में उसका महत्त्व बताया। बीएससी-बीएड की छात्रा स्मृति सिंह ने कार्यक्रम का संयोजन किया।

स्वागत महोत्सव में किया नवागंतुक छात्राओं का स्वागत

योगिता जांगिड़ बनी 'मिस फ्रेशर', सना खान बनी 'मिस दिवा'

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय मे वरिष्ठ छात्राओं द्वारा अपनी नवआगन्तुक बहिनों के लिए वेलकम पार्टी का आयोजन 10 फरवरी को किया गया। इस अवसर पर वरिष्ठ छात्राओं ने नवआगन्तुक छात्राओं के स्वागत में एक रंगारंग कार्यक्रम भी आयोजित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि यह विश्वविद्यालय गुरुदेव तुलसी के सपनों का साकार रूप है, यहां के कण-कण में सत्य, अहिंसा एवं त्याग की भावना को सर्वोपरि माना गया है। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवारी ने छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम में नवआगन्तुक छात्राओं की ओर से हेमपुष्पा चौधरी ने महाविद्यालय एवं संस्थान की विशेषताओं से अवगत करवाते हुए बताया कि यहां की विशेषताएं प्रदेश भर में अनूठी पहचान रखती हैं।

इस अवसर पर नवागंतुक छात्राओं के लिए मिस फ्रेशर, मिस दिवा एवं फैशन स्टेशन खिताब के लिए आयोजित प्रतियोगिता में बौद्धिक एवं तार्किक प्रश्न किये गए। इसमें मिस फ्रेशर का खिताब योगिता जांगिड़ को दिया गया। मिस दिवा का खिताब सना खान को एवं फैशन स्टेशन का खिताब नजमा बानो को दिया गया। रंगारंग कार्यक्रम में कई प्रकार के राजस्थानी, पंजाबी, गुजराती फोक डांस की रंगारंग छटा बिखेरी गई। छात्राओं द्वारा कार्यक्रम में चैन मेकिंग, बैलून डांस, कप टावर, वर्ड प्ले आदि कई खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। कप टावर में उर्मिला, वर्डप्ले में आकांक्षा शर्मा और बैलून डांस में योगिता एवं आकांक्षा विजेता रही।

वहीं चैनमेकिंग में पूजा इनाणियाँ प्रथम रही। कार्यक्रम का संचालन छात्राओं पूजा शर्मा, स्नेहा शर्मा, नवनिधि दौलावत, महक चौहान, वैष्णवी वर्मा एवं अंजना प्रजापत ने किया।

बैंकिंग क्षेत्र के सुरक्षित अवसरों का विद्यार्थी लाभ उठाएं- गुरूमुख सिंह

पंजाब नेशनल बैंक के ब्रांच मैनेजर गुरुमुख सिंह ने 'बैंकिंग क्षेत्र में नौकरियों की सम्भावनाएं' विषय पर 18 अप्रेल को आयोजित कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए वर्तमान समय में बैंकिंग को सबसे सुरक्षित व अनेकानेक अवसरों से भरा हुआ क्षेत्र बताया तथा छात्राओं को प्रेरित किया कि इस क्षेत्र में मौजुद अवसरों का लाभ उठाते हुए अपने जीवन को संवारना चाहिए। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में वाणिज्य संकाय द्वारा आयोजित इस कार्यशाला की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो.आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बैंक के कर्मचारियों को मिलने वाले लाभों पर प्रकाश डाला। कार्यशाला के अंत में आयोजित 'प्रश्न-उत्तर सत्र' में कॉलेज की छात्राओं ने बैंकिंग जॉब के बारे में अनेक सवाल किए और उनकी जिज्ञासाओं का वक्ताओं ने समाधान किया। प्रारम्भ में मुख्य अतिथि पंजाब नेशनल बैंक के मैनेजर गुरुमुख सिंह का शॉल व स्मृति चिन्ह प्रदान करके सम्मान किया गया। कार्यशाला के विशिष्ट अतिथि कालूराम जाट का सम्मान भी इस अवसर पर किया गया। स्वागत वाणिज्य संकाय की प्राध्यापिका श्वेता खटेड़ ने किया।

'इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स' की कार्यक्रम श्रृंखला में प्रतियोगिता आयोजित

पोस्टर प्रतियोगिता में राधिका चौहान रही प्रथम

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में यूजीसी के निर्देशानुसार चलाए जा रहे 'इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स' के कार्यक्रमों की श्रृंखला में पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन 11 मार्च को किया गया। प्रतियोगिता का विषय 'मिलेट्स के पौष्टिक एवं स्वास्थ्य लाभ' रखा गया। कार्यक्रम में 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें से प्रथम स्थान पर राधिका चौहान रही। द्वितीय स्थान पर निकिता बोथरा एवं पूजा शर्मा तथा तृतीय स्थान पर निधि चौरड़िया रही। विजेता छात्राओं का प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी तथा वित्ताधिकारी आर. के. जैन ने मोमेंटो प्रदान कर सम्मान किया।

फेयरवेल पार्टी का आयोजन

कल्पना मिस फेयरवेल, अमीषा मिस ब्रेनी व निधि स्टार ऑफ दी डे चुनी गई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में अंतिम वर्ष की छात्राओं के विदाई समारोह का आयोजन यहां ऑडिटोरियम में 13 मई को किया गया। इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। फाइनल ईयर की छात्राओं ने इस अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। उनके लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणामों में मिस फेयरवेल के रूप में कल्पना सोनी चुनी गई, वहां मिस ब्रेनी अमीषा बनी तथा स्टार ऑफ द डे के रूप में निधि दौलावत का चयन किया गया। प्रतियोगिताओं की निर्णायक डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय व डॉ. आभा सिंह रहीं। कार्यक्रम में खुशी जोधा, स्नेहा शर्मा, अंजु गोयल, हेमलता टेलर आदि ने अपनी विविध प्रस्तुतियां दी। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ ने छात्राओं से अपने जीवन में सदैव रचनात्मक बने रहने का आह्वान किया।

प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत संदेश प्रस्तुत करते हुए छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए उन्हें यहां प्रदत्त शिक्षाओं को सदैव अपने जीवन में उतारने का संदेश दिया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने छात्राओं के भावी जीवन हेतु उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम का शुभारंभ राधिका एवं ग्रुप द्वारा प्रस्तुत गणेश वंदना से किया गया। कार्यक्रम के संचालन में सना, आशना, हेमपुष्पा, संतोष ठोलिया, वैष्णवी वर्मा, प्रियंका, पूनम, आस्था ने अपना योगदान दिया। फोटोग्राफी का कार्य कुसुम एवं भावना चौधरी द्वारा किया गया। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं में योगिता जांगिड़, आकांक्षा शर्मा, करिश्मा सोनी, ममता अग्रवाल, निधि चौरड़िया आदि ने भूमिका निभाई। आयोजन में डा. प्रगति भटनागर, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़, डॉ. विनोद सैनी व प्रेयस सोनी ने सहयोग किया। प्रो. रेखा तिवारी, प्रगति चौरड़िया, देशना चारण, डा. विनोद सियाग, प्रमोद ओला एवं अन्य समस्त स्टाफ भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

सद्गुण व्यक्तित्व को विश्वसनीय बनाते हैं- प्रो. त्रिपाठी

'विभिन्न दर्शनों में सद्गुण' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला की श्रृंखला में 'विभिन्न दर्शनों में सदगुण' शीर्षक पर 21 फरवरी को आयोजित व्याख्यान में मुख्य वक्ता प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने पाश्चात्य एवं भारतीय दर्शन में निहित सद्गुणों के महत्त्व पर प्रकाश डाला और सद्गुण शब्द की व्याख्या करते हुए कहा कि सद्गुण व्यक्तित्व के प्रति विश्वास पैदा करता है। उन्होंने इस संदर्भ में युधिष्ठिर व सत्यवादी हरिश चंद्र के उदाहरण दिए। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि पाश्चात्य दर्शन में प्रथम दार्शनिक थेलीज से लेकर पाइथागोरस तक के सभी सोलह दार्शनिकों ने वैचारिक शिखरों को छुआ। इनमें सद्गुणों पर सर्वप्रथम चर्चा का श्रेय सुकरात को जाता है। उन्होंने सुकरात द्वारा बताये गए आन्तरिक सौन्दर्य की व्याख्या प्रस्तुत की। साथ ही उन्होंने प्लेटो, अरस्तू, सिज्विक, हीगल बैलेड्स एवं काण्ट के वैचारिक महत्त्व को भी बताया गया। प्रो. त्रिपाठी ने भारतीय दर्शन में श्रमण परम्परा व वैदिक परम्परा को व्याख्यायित करते हुए बताया कि श्रमण परम्परा में जैन व बौद्ध दर्शनों को लिया जाता है तथा वैदिक दर्शन परम्परा में न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा एवं वेदान्त के रूप में कुल छह दर्शनों को शुमार किया जाता है। दर्शनों के मध्य तुलनात्मक विवेचना करते हुए उन्होंने बताया कि जहां पाश्चात्य दर्शन सद्गुणों को ही मानव जीवन का साध्य मानता है, वहीं भारतीय दर्शन ने मोक्ष को मानव जीवन का साध्य एवं सदगुणों को मोक्ष प्राप्ति के मार्ग का साधन माना है। व्याख्यान के उपरान्त प्रो. त्रिपाठी ने संकाय सदस्यों की दर्शन सम्बंधी जिज्ञासाओं का समाधान किया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन अभिषेक चारण ने किया।

इतिहास का वास्तविक अवलोकन समय की आवश्यकता बना

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में विभागीय सेमिनार की श्रृंखला में 25 अप्रेल को प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में इतिहास के सहायक आचार्य प्रेयस सोनी ने अपने व्याख्यान में इतिहास का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए बताया कि अतीत के अध्ययन के साथ-साथ इतिहास वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शन करता है। सोनी ने भारतीय इतिहास लेखन के इतिहास पर प्रकाश डाला तथा कहा कि राष्ट्र के विकास में इतिहास बहुत योगदान दे सकता है। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने प्रेयस सोनी को इतिहास के महत्त्वपूर्ण एवं मार्मिक विश्लेषण हेतु बधाई दी। अंत में अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विनोद कुमार सैनी ने किया।

राष्ट्रीय युवा संसद का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्रार्थना कक्षा में 16 मार्च को राष्ट्रीय युवा संसद का आयोजन रखा गया, जिसमें छात्राओं ने संबंधित भूमिकाएं अदा कीं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ तथा विशिष्ट अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन थे। मुख्य अतिथि प्रो. दूगड़ ने कार्यक्रम में बताया कि भारतीय संसद के अधिवेशन लोकतंत्र की नींव माने जाते हैं। अधिवेशन पारस्परिक चर्चा और विचार-विमर्श का मंच होने के कारण सत्तापक्ष तथा प्रतिपक्ष दोनों राष्ट्रहित, लोकहित एवं राष्ट्रीय विकास जैसे मुद्दों पर चर्चा होती रहती है। उन्होंने छात्राओं द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि युवाओं में नेतृत्व क्षमता तथा आत्म विश्वास में वृद्धि करने के लिए ऐसे कार्यक्रम समय-समय पर होने चाहिए। विशिष्ट अतिथि प्रो. जैन ने ऐसे कार्यक्रमों को लाभदायक मानते हुए छात्राओं के उत्साह की सराहना की। कार्यक्रम में प्रथम समीक्षक के रूप में डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने अपनी समीक्षा में इसे एक अच्छा कदम और राजनीतिक सामाजीकरण की दिशा में महत्त्वपूर्ण आयाम बताया। द्वितीय समीक्षक डॉ. लिपि जैन ने छात्राओं के बेहतरीन प्रदर्शन के आधार पर कुछ श्रेष्ठ छात्राओं का चयन कर उन्हें संस्थान का प्रतीक चिन्ह् भेंट कर सम्मानित किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य में युवाओं में राजनीतिक नेतृत्व विकसित करने के लिए समय-समय पर ऐसे आयोजनों की आवश्यकता बताते हुए इसे एक बौद्धिक प्रयास बताया। इससे पूर्व आयोजन समिति के सदस्य डॉ. बलबीर सिंह ने भारतीय संसद के एक आदर्श प्रतिरूप के रूप में आयोजित इस अधिवेशन के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। अतिथियों का स्वागत अभिषेक शर्मा, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अभिषेक चारण, डॉ. बलबीर सिंह, प्रेयस सोनी व डॉ. प्रगति भटनागर ने किया। कार्यक्रम का संयोजन श्वेता खटेड़ ने किया तथा अंत में प्रगति चौरड़िया ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में आयोजन समिति के सदस्य अभिषेक शर्मा, प्रगति चौरड़िया, डा. बलवीर सिंह, श्वेता खटेड़ तथा संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभासिंह डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, रजत सुराना, प्रमोद ओला, कुशाल जांगिड़, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

भाषण प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 23 फरवरी को आजादी के 75 वर्ष की कार्यक्रम शृंखला में राजस्थान युवा पखवाड़े के तहत महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 'गांधीवादी चिन्तन और स्वतंत्रता आन्दोलन' शीर्षक से एक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर निधि दौलावत, द्वितीय स्थान पर हेमपुष्पा चौधरी एवं तृतीय स्थान पर ईशा जड़िया रही। प्रतियोगिता का संयोजन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण द्वारा किया गया। इस दौरान महाविद्यालय की छात्राओं के साथ सभी संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे ।

अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में किया पत्र वाचन

संस्थान के सहायक आचार्य डॉ. बलबीर सिंह ने भारतीय राजनीति विज्ञान संघ (IPSA) द्वारा 26 व 27 मार्च को विज्ञान और तकनीकी विश्वविद्यालय, मेघालय में आयोजित दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार में पत्र-वाचन किया। इन्होंने 'वैश्विक आतंकवाद की चुनौतियां' विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया, जिसके अंतर्गत आतंकवाद के विभिन्न आयामों, इसके वैश्विक परिदृश्य पर दुष्परिणामों एवं आतंकवाद के निराकरण हेतु राष्ट्रों की भूमिका क्या होनी चाहिए, को रेखांकित किया। सेमिनार में देश-विदेश के करीब 500 राजनीति विज्ञान के वरिष्ठ विचारकों, विषय-विशेषज्ञों, आचार्यों तथा शोधार्थियों ने भाग लिया। इस उपलब्धि पर संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने शुभकामनाएँ दी और ऐसे शैक्षणिक अनुष्ठानों को शैक्षिक उन्नयन में महत्त्वपूर्ण कदम बतलाया ।

वाद-विवाद प्रतियोगिता में अभिलाषा स्वामी को मिला प्रथम पुरस्कार

'सैन्य सेवाओं में महिलाओं को कॉम्बैट् भूमिका की अनुमति देना लैंगिक समानता की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम' विषय पर आयोजित वाद-विवाद प्रतियोगिता में स्थानीय जैन विश्वभारती संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा अभिलाषा स्वामी ने 12 जनवरी को प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। स्वामी को यह पुरस्कार मारवाड़ मूंडवा के वीर तेजा महिला शिक्षण एवं शोध संस्थान तेजास्थली में पूर्व केन्द्रीय मंत्री एवं राजस्थान लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष सीआर चौधरी ने प्रदान किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित विवेकानन्द क्लब के संयोजक अभिषेक चारण ने बताया कि छात्रा की इस उपलब्धि पर द्वारा महाविद्यालय उसका भावभीना स्वागत किया गया।

उन्होंने बताया कि कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में महाविद्यालय में स्थापित विवेकानंद क्लब निरन्तर छात्राओं में वक्तव्य कला के विकास के लिए सक्रिय है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने छात्र को प्रोत्साहित करते हुए उसे सम्मानित किया। उन्होंने अन्य छात्राएं को भी प्रेरणा लेकर सदैव आगे बढकर परचम फहराने के लिए प्रेरित किया।

रोजगार परामर्श केंद्र में प्रतियोगी परीक्षाओं के संदर्भ में व्याख्यान का आयोजन

महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं को खोजकर अध्ययन करना होता है आवश्यक- श्योराण

'यश गुरू' एप्प के संस्थापक एवं 'राजस्थान जीके का चिराग' पुस्तक के लेखक संजयपाल सिंह श्योराण ने कहा कि परीक्षार्थियों द्वारा प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी में सबसे महत्त्वपूर्ण बिंदु परीक्षा का पाठ्यक्रम, पुराने प्रश्न-पत्र, आधारभूत आधिकारिक पुस्तकों का अध्ययन, अध्ययन सामग्री में से महत्त्वपूर्ण बिंदुओं को खोजना होता है। साथ ही रिवीजन करते समय तैयारी का टेस्ट सीरीज के माध्यम से मूल्यांकन करना, विगत परीक्षाओं में हुई गलतियों को सुधार कर परीक्षा-कक्ष में बेहतरीन प्रदर्शन करना भी एक बेहतर परीक्षार्थी के लिए बेहद जरूरी है। वे 28 अप्रेल को यहां संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय स्थित रोजगार परामर्श केंद्र में वहां पर नियमित रूप से उपस्थित होकर अपने स्नातक डिग्री के साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाली छात्राओं को उनकी तैयारियों के सम्बंध में मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए आयोजित विशेष व्याख्यान में सम्बोधित कर रहे थे।

व्याख्यान की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की। रोजगार परामर्श केंद्र के प्रभारी अभिषेक चारण ने बताया कि चूरू जिले के सुजानगढ से आए संजयपाल सिंह श्योराण एक सुलझे हुए विचारक, लेखक व मार्गदर्शक हैं। उनके दिये गए दिशा-निर्देश छात्राओं के लिए आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे। कार्यक्रम के अध्यक्षीय संबोधन में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि श्योराण का व्याख्यान प्रतियोगी परीक्षाओं में रुचि रखने वाली छात्राओं के हित में रहेगा। उन्होंने महर्षि पतंजलि द्वारा विद्यार्थी जीवन के संदर्भ में बताई गई तीन महत्त्वपूर्ण बातों दीर्घ समय साधना, निरंतरता एवं पूर्ण आस्था को व्याख्यायित किया। अंत में डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

व्यापारिक कानूनों पर छात्राओं ने दिया प्रजेंटेशन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 17 फरवरी को व्यावसायिक सन्नियम पर छात्राओं के प्रस्तुतीकरण का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि छात्राओं में सीखने की ललक होनी चाहिए। प्रगति के लिए जरूरी है कि बोलने में होने वाली झिझक को समाप्त किया जाए। खुलकर बिना संकोच बोलने से ही उनकी प्रस्तुति प्रभावी बन सकती है। उन्होंने सीखने और उसे प्रस्तुत करने के सम्बंध में अनेक गुर भी बताए और छात्राओं को निडर होकर अपनी बात रखने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के अतिथि जगदीश यायावर ने कॉमर्स जैसे विषय की गहनता और उनके सूत्रों की जीवन में उपयोगिता के बारे में बताया।

कार्यक्रम में मोहिनी प्रजापत, विशाखा जांगिड़, डिम्पल जांगिड़, करिश्मा सोनी, योगिता जांगिड़ व आकांक्षा शर्मा ने पीपीटी के माध्यम से इंडियन कंट्राक्टर एक्ट- 1872, सेल एंड गुड्स एक्ट-1930, कंज्यूमर प्रोटेक्शन एक्ट तथा निगोसिएबल इंस्ट्रूमेंट्स एक्ट-1881 के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए उनके बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन श्वेता खटेड़ ने किया। कार्यक्रम में आयोजक प्रगति चौरड़िया, अभिषेक शर्मा व छात्राएं उपस्थित रहीं।

प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता बहुत महत्त्वपूर्ण सहायक होती है- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित आचार्य महाश्रमण क्लब के तत्त्वावधान में 2 मई को प्रातः 11 बजे प्राचार्य प्रोफेसर आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में एक सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में कुल 9 टीमों ने भाग लिया, जिनके नाम जीजाबाई, रानी पद्मिनी, रानी लक्ष्मीबाई, इंदिरा गांधी, सरोजिनी नायडू, सावित्रीबाई फुले, साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा एवं रानी कर्मावती रखे गए। महाश्रमण क्लब के प्रभारी प्रेयस सोनी ने बताया कि प्रतियोगिता में विश्व के नवीनतम सामान्य ज्ञान, सामान्य विज्ञान, राजस्थान सामान्य ज्ञान, फिल्म जगत् एवं भौगोलिक परिदृश्य से संबंधित विभिन्न प्रकार के प्रश्न पूछे गए। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा टीम रही, वहीं द्वितीय स्थान पर इंदिरा गांधी टीम एवं तृतीय स्थान पर संयुक्त रूप से रानी लक्ष्मीबाई एवं रानी कर्मावती टीम रही। विजेताओं की घोषणा महाविद्यालय प्राचार्य प्रोफेसर आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की। प्रतियोगिता का संचालन संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया, वही प्रश्नों से संबंधित समय सीमा का सीमांकन वाणिज्य संकाय सदस्या सुश्री श्वेता खटेड़ द्वारा किया गया । इस दौरान संकाय सदस्यों के रूप में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रोफेसर रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विनोद कुमार सैनी, सुश्री प्रगति चौरड़िया एवं सुश्री देशना चारण उपस्थित रहे।

'नवीनतम कर व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण विश्लेषण' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 31 मार्च को मासिक व्याख्यानमाला की श्रृंखला में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 'नवीनतम कर-व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण विश्लेषण' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। वाणिज्य संकाय के सदस्य अभिषेक शर्मा ने अपने व्याख्यान में कर-नियोजन के उद्देश्यों के लिए वित्तीय वर्ष की शुरुआत में कर व्यवस्था को चुनने को महत्त्वपूर्ण बताया तथा कहा कि एक करदाता को नई कर व्यवस्था के आयकर की तुलना पिछली व्यवस्था आयकर से करनी चाहिए। निवेश और टीडीएस या देय अग्रिम कर की गणना वर्ष की शुरुआत में करदाता की पसंद की करप्रणाली के अनुसार की जाती है। शर्मा ने वर्तमान परिप्रेक्ष में संकेत करते हुए संक्षेप में कहा कि नई प्रणाली उन लोगों के लिए अधिक अनुकूल होगी, जो कर बचत, स्वास्थ्य बीमा, एनपीएस निवेश आदि के लिए कम कटौती का दावा करते हैं, जो कर-बचत निवेश का उपयोग करने वाले व्यक्तियों के विपरीत है। साथ ही 5-10 लाख रुपये की आय वर्ग के व्यक्तियों को भी नई व्यवस्था से लाभ होगा, क्योंकि वे आयकर अधिनियम की धारा 115 बीएसी के तहत कम कटौती का दावा कर सकते हैं। वहीं दूसरी ओर उच्च आयकर वर्ग में जो प्रति वर्ष 15 लाख रुपये से अधिक कमाते हैं, वे कर-बचत निवेश करके पुरानी

कर व्यवस्था का लाभ उठा सकेंगे। व्याख्यान के पश्चात् शर्मा ने विभिन्न संकाय सदस्यों की व्याख्यान संबंधित जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने वर्तमान परिवर्तित कर-प्रणाली के दौर में व्याख्यान को महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित बताया तथा नई कर-व्यवस्था को भारत के दूरगामी हितों के अनुकूल बताया, लेकिन सीनियर सिटीजन हेतु पुरानी कर-व्यवस्था को अधिक कारगर माना। सहायक आचार्या (आईटी) डॉ. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया।

भारतीय संविधान के दार्शनिक आधार पर व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मासिक व्याख्यान माला के अन्तर्गत 11 अप्रेल को भारतीय संविधान के दार्शनिक आधार विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस व्याख्यान में डा. बलवीर सिंह चारण ने बताया कि भारतीय संविधान एक ऐसा दस्तावेज है, जो शासन संचालन के साथ ही अंतर्राष्ट्रीयता की भावना भी समावेशित किए है। उन्होंने भारतीय संविधान को जन अपेक्षाओं एवं जन-इच्छाओं का ऐसा प्रतिबिम्ब बताया, जिसमें प्रत्येक नागरिक को बिना किसी भेदभाव के अपना विकास करने का अवसर प्राप्त रहता है। डॉ. चारण ने बताया कि भारतीय संविधान के इस रूप के पीछे हमारे संविधान निर्माताओं के दार्शनिक आदर्श रहे हैं। अंत में चारण ने विभिन्न संकाय सदस्यों की विषय सम्बंधित जिज्ञासाओं का समाधान भी किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने संवैधानिक शासन संचालन के आधार कहे जाने वाले न्याय, स्वतंत्रता, समानता, कर्तव्यपरायणता एवं राष्ट्रीयता के भावों को स्वस्थ लोकतंत्र हेतु महनीय बताते हुए इन्हें मानवीय मूल्यों का सच्चा स्वरूप बताया। अंत में श्वेता खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. विनोद कुमार सैनी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, प्रगति चौरड़िया, अभिषेक शर्मा, देशना चारण, प्रेयस सोनी आदि उपस्थित रहे।

'मां' पर अनुभूत संस्मरणों की प्रतियोगिता में ममता प्रथम और शुभा द्वितीय रही

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में संचालित विवेकानंद क्लब के तत्वावधान में 24 मई को हिंदी की लोकप्रिय गद्य विधा 'संस्मरण' पर एक प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में छात्राओं ने 'मां' शीर्षक पर अपने जीवन के अनुभूत संस्मरण रचनाओं के रूप में लिखे।

विवेकानंद क्लब के प्रभारी एवं प्रतियोगिता संयोजक अभिषेक चारण ने बताया कि प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार एवं अभिषेक शर्मा द्वारा दिये गए निर्णय के अनुसार प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर ममता गोरा रही। द्वितीय स्थान पर शुभा भोजक एवं तृतीय स्थान पर दो छात्राएं हेमपुष्पा चौधरी व अभिलाषा स्वामी रही। प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने सभी विजेता छात्राओं को दूरभाष से उनके साहित्यिक क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी। प्रतियोगिता का संचालन सह-संयोजक इतिहास संकाय सदस्य प्रेयस सोनी ने किया।

राजस्थान दिवस पर बताया जल संरक्षण का महत्त्व

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में राजस्थान दिवस पर 30 मार्च को प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में जल शक्ति अभियान-2022 की महत्ता पर एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रो. त्रिपाठी ने राजस्थान की प्रगति शौर्य व पराक्रम के बारे में बताते हुए रेगिस्तानी धरती पर पानी की कमी एवं पानी के महत्त्व की जानकारी दी। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी तथा विशिष्ट अतिथि डॉ. प्रगति भटनागर थी। प्रेयस सोनी ने राजस्थान के स्वर्णिम इतिहास एवं एकीकरण के दौरान आने वाली विभिन्न बाधाओं पर प्रकाश डाला। छात्रा वंदना आचारी ने राजस्थानी भाषा के चितेरे कवि कन्हैयालाल सेठिया द्वारा रचित लोकप्रिय गीत 'धरती धोरां री' गाकर सबको भाव-विभोर किया। छात्रा हेमपुष्पा चौधरी व मोहिनी प्रजापत ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण ने किया।

पृथ्वी दिवस पर छात्राओं द्वारा कार्यक्रम का आयोजन

बढते प्रदूषण से पृथ्वी की दुर्दशा दूर करने आगे आएं- जेतमाल

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में 22 अप्रेल को पृथ्वी दिवस (अर्थ डे) को उत्साह पूर्वक मनाया गया। कार्यक्रम संयोजक अभिषेक चारण ने बताया कि विज्ञान, कला एवं वाणिज्य संकाय की छात्राओं ने धरती के प्रति अपनी मानवीय जिम्मेदारी समझते हुए इस कार्यक्रम को विशेष उत्साह के साथ मनाया। तीनों संकायों का प्रतिनिधित्व करते हुए छात्राओं द्वारा ही कार्यक्रम में अध्यक्षीय, मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि की भूमिका निभाई गई। अध्यक्षता राजनन्दिनी जैतमाल (कला वर्ग) ने की, मुख्य अतिथि निधि दौलावत (वाणिज्य वर्ग) एवं विशिष्ट अतिथि सपना मीणा (वाणिज्य वर्ग) थी। कार्यक्रम की अध्यक्षा जैतमाल ने कहा कि आज का दिन 'वर्ल्ड अर्थ डे' अपने आप में खास है, क्योंकि बढते प्रदूषण एवं गंदगी के कारण हमारी पृथ्वी की जो दुर्दशा हो रही है उससे समय रहते पृथ्वी को निजात दिलाकर हम अपने मानवीय कर्तव्यों का निर्वहन कर सकते हैं।

इसके बाद मुख्य अतिथि तथा विशिष्ट अतिथि ने भी पर्यावरण संरक्षण के सम्बन्ध में अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में छात्रा प्रियंका गोदारा, खुशी जोधा, आशना व प्रियंका सोनी ने भी धरती के प्रति मानवीय कर्तव्यों का समर्पित भाव से अभिव्यक्तियाँ दी। अंत में विज्ञान संकाय की छात्रा भावना चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

शहीद दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

शहीद भगतसिंह का जीवन है प्रेरणादायी- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं एनसीसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 23 मार्च को शहीद दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने शहीद भगत सिंह के जीवन के सम्बन्धित प्रेरक घटनाओं की जानकारी दी और बताया कि वे शुरू में महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन से जुड़े हुए थे, लेकिन जब जलियांवाला बाग में निहत्थे व निर्दोष लोगों पर गोलियां बरसाने का नजारा देखा, तो अहिंसा से उनका मन उखड़ गया और चन्द्रशेखर आजाद की गदर पार्टी में शामिल हो गए। प्रो. त्रिपाठी ने भगतसिंह के साथ-साथ सुखदेव व राजगुरू के बलिदानों को भी याद किया और उनसे प्रेरणा

लेने की आवश्यकता बताई। मुख्य अतिथि जगदीश यायावर ने विद्यार्थियों को भगतसिंह के जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर राष्ट्र के लिए अपना जीवन समर्पित करने की जरूरत पर बल दिया।

कार्यक्रम में ममता गोरा, भावना जोशी, दीक्षा चौधरी, आशा स्वामी, मनीषा चौधरी, कोमल, साक्षी शर्मा, हेमपुष्पा, निशा, पूजा आदि ने कविताओं एवं वक्तव्य के माध्यम से भगतसिंह के जीवन, शहादत और राष्ट्रप्रेम की भावनाओं को अभिव्यक्ति प्रदान की। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संयोजक अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में अजयपालसिंह, श्वेता खटेड़, देशना चारण, अभिषेक शर्मा आदि उपस्थित रहे।

बसंत पंचमी पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में 5 फरवरी को बसंत पंचमी पर्व मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि सरस्वती के प्राकट्य दिन को बसंत ऋतु का आगमन माना जाता है, साथ ही इसे विद्यार्थी-जीवन के एक अहम स्तंभ दिन के रूप में स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि हर व्यक्ति के जीवन में शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश के साथ ही किसी न किसी रूप में सरस्वती वंदन अवश्य होता है और उसी वंदन के साथ ही विद्यार्थी के जीवन की सार्थक शुरुआत होती है। प्रो. त्रिपाठी ने कुमारसंभवम्, अभिज्ञान शाकुंतलम्, मेघदूत आदि महान् कृतियों के रचनाकार, संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान् कालिदास के जीवन उद्धरणों के माध्यम से मां सरस्वती के महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं कहा कि यह आयोजन छात्राओं में सुशिक्षित बनने एवं विद्या की अधिष्ठात्री मां वीणापाणी में आस्था रखकर भारतीय संस्कृति के प्रति सजग रहने की प्रेरणा देता है। कार्यक्रम में भावना चौधरी, सना खान, राजनन्दिनी जैतमाल, योगिता जांगिड़, आकांक्षा शर्मा, हेमपुष्पा, हिमांशी, खुशी जोधा आदि छात्राओं ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम के अंत में सूचना प्रौद्योगिकी की सहायक आचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

डॉ. अम्बेडकर जयन्ती पर कार्यक्रम का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती पर 13 अप्रेल को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी ने की, जिन्होंने कहा, अपने कर्मों से अपनी पहचान बनाकर ख्याति अर्जित करने वाले डॉ. अम्बेडकर का शुरुआती जीवन अवश्य संघर्षमय रहा, लेकिन संविधान निर्माण के दौरान परमार्थ का रास्ता चुनते हुए पिछड़े व दलित वर्ग के उत्थान का कार्य कर वे देश भर में एक लोकप्रिय चेहरा बन गए। कार्यवाहक प्राचार्या डॉ. प्रगति भटनागर ने प्रारूप समिति से लेकर संविधान निर्माण प्रक्रिया में अम्बेडकर के योगदानों की विस्तार पूर्वक विवेचना की। डॉ. बलवीरसिंह ने कहा कि राष्ट्र निर्माण में अम्बेडकर के योगदानों को भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने समतामूलक समाज की संरचना करने में अद्वितीय योगदान दिया। कार्यक्रम में छात्रा ममता गोरा, सरिता मण्डा, राजनन्दिनी जैतमाल व प्रियंका प्रजापत ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्वेता खटेड़ ने किया। कार्यक्रम में अभिषेक शर्मा, प्रगति चौरड़िया, प्रेयस सोनी, देशना चारण, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालक अभिषेक चारण ने किया। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग की ओर से डॉ. अम्बेडकर जयंती के अवसर पर समानता भोज का आयोजन किया, जिसमें छात्राओं एवं शिक्षिकाओं ने अपना खुद का बनाया खाना विश्वविद्यालय में साथ लाकर सबके साथ मिलकर सामूहिक रूप से भोजन करके समानता का संदेश दिया। इसमें रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, वित्ताधिकारी आरके जैन, डा. अमिता जैन, डा. आभा सिंह, डा. सरोज राय आदि उपस्थित रहे।

संस्थान की महत्त्वाकांक्षी परियोजना

आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एण्ड योग

कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में आजादी का अमृत महोत्सव के तहत 'एक भारत : श्रेष्ठ भारत' के अन्तर्गत मातृभाषा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 5 मार्च को कविता पाठ प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर अभिलाषा स्वामी, द्वितीय भावना चौधरी तथा तृतीय स्थान पर हेम कंवर रही। प्रतियोगिता में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. आभा सिंह, डॉ. विकास शर्मा एवं अभिषेक चारण थे। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने निर्णायकों का स्वागत किया एवं परिचय करवाया। प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. लिपि जैन एवं डॉ. विनोद कस्वां ने निर्णायकों का पुष्पगुच्छ द्वारा सम्मान किया। निर्णायकों द्वारा सुझाव भी प्रस्तुत किये गये। कार्यक्रम में प्रमोद ओला, डॉ. प्रेयस सोनी आदि उपस्थित रहे।

मेहंदी प्रतियोगिता में तरन्नुम बानो प्रथम रही

मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन 28 फरवरी को किया गया। मेहंदी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर तरन्नुम बानो, द्वितीय मनीषा तुनगरिया तथा तृतीय स्थान पर कौशल्या रही। प्रतियोगिता निर्णायक डॉ. सरोज राय एवं डॉ. सुनीता इन्दोरिया रही। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. लिपि जैन ने किया और कार्यक्रम का संचालन हंसा कंवर एवं ऊषा सारण ने किया।

एकल गायन प्रतियोगिता में राधिका प्रथम रही

आजादी के अमृत महोत्सव के उपलक्ष्य में 3 मई को भारत सरकार के राष्ट्रीय कार्यक्रम 'एक भारत : श्रेष्ठ भारत' के अंतर्गत देश की विविधता को पहचान दिलाने के उद्देश्य से संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एकल गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के परिणामों में प्रथम स्थान पर राधिका चौहान रही। द्वितीय स्थान पर नवनिधि दौलावत तथा तृतीय स्थान पर संतोष ठोलिया रही। प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागियों को देश की स्थानीय भाषाओं के लोकप्रिय गानों पर गायन का अपना वीडियो बनाना था, जिसमें छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता का संचालन श्वेता खटेड़ ने किया।

राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के निर्देशानुसार कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन व मार्गदर्शन में आयोजित हो रहे 'आजादी का अमृत महोत्सव' कार्यक्रम की कड़ी के अंतर्गत 25 जनवरी को राष्ट्रीय मतदाता दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम कार्यक्रम के संयोजक डॉ. बलबीर सिंह ने राष्ट्रीय मतदान दिवस मनाए जाने के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर अपने विचार प्रस्तुत किए और भारत में राष्ट्रीय मतदान दिवस मनाए जाने के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मतदान की शक्ति सशक्त लोकतंत्र के निर्माण में महत्त्पूर्ण आधार होती है। प्रत्येक मतदाता का कर्तव्य है कि वह जाति, धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र आदि से ऊपर उठकर सशक्त, कर्मठ एवं योग्य उम्मीदवार के पक्ष में निडर होकर मतदान करें। अंत में अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में करीब 50 विद्यार्थियों की उपस्थित रहीं।

विश्व महिला दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

'आजादी का अमृत महोत्सव' के अन्तर्गत संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर 8 मार्च को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने महिला दिवस मनाए जाने के पीछे की कहानी के बारे में बताया तथा कहा कि समानता के दौर में किसी भी तरह से लिंगभेद रखा जाना अनुचित है। उन्होंने कर्मण्यता और जुझारूपन में भी महिलाओं को अग्रणी बताते हुए आईपीएस आरती डोगरा, चन्द्रकला, टीना डाबी आदि के उदाहरण प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम में स्नेहा शर्मा, मंजू चौधरी, शुभ्रा भोजक, नीलम शर्मा, सुनीता चौधरी, स्मृति कुमारी, ममता गोरा, सीता कंवर, निशा जाट, कोमल मुंडेल, सरिता मंडा आदि छात्राओं ने भी अपने विचार प्रकट करते हुए महिलाओं के समाज में महत्त्व एवं महिला व पुरुष को परस्पर सहयोगी की भूमिका रखने की आवश्यकता बताई। प्रारम्भ में एनएसएस की प्रथम इकाई प्रभारी डॉ. बलवीर सिंह ने महिला दिवस का महत्त्व बताया तथा अंत में एन.एस.एस. की द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में डॉ. विनोद कुमार सैनी, देशना चारण, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी आदि उपस्थित रहे।

शहीद दिवस पर निकाला शांतिमार्च और दी श्रद्धांजलि

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के निर्देशन में युवा मामलात एवं खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार संचालित किए जा रहे आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रमों की शृंखला में एनसीसी कैडेट्स तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं ने महात्मा गांधी की पुण्यतिथि शहीद दिवस के अवसर पर 30 जनवरी को शांति मार्च निकाला। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रीय नेताओं एवं शहीदों का स्वतंत्रता प्राप्ति में अपूरणीय योगदान रहा, जिसे याद करके उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ उनके आदर्शों को अपनाया जा सकता है। कार्यक्रम में राष्ट्रीय सेवा योजना के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह तथा खेल प्रशिक्षक अजय पाल सिंह भाटी उपस्थित रहे ।

सूर्य नमस्कार कार्यक्रम आयोजित

भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे आजादी का अमृत महोत्सव के तहत प्रत्येक व्यक्ति द्वारा प्रतिदिन 13 बार सूर्य नमस्कार किए जाने के कार्यक्रम के तहत यहां संस्थान में 2 फरवरी से कार्यक्रम का आयोजन किया जाकर 7 फरवरी तक चलाया गया। शिक्षा विभाग में आयोजित इस सूर्य नमस्कार कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भाग लेते हुए सूर्य नमस्कार की क्रियाएं पूरी की। योग एवं जीवन विभाग के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन डॉ. सरोज राय ने किया। कार्यक्रम में खेल-प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी व योग विभाग के विद्यार्थी चित्रा बगड़ा, चंचल आदि उपस्थित रहे।

निबंध प्रतियोगिता में ममता व खुशी प्रथम रही

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा निर्देशित साइबर जागरूकता दिवस के अवसर पर 5 जनवरी को संस्थान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 'साइबर अपराध : जागरूकता ही बचाव' विषयक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी एवं प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि संस्थान में प्रत्येक माह प्रथम बुधवार को साइबर जागरूकता दिवस का आयोजन किया जाता है, जिसका उद्देश्य वर्तमान में हो रहे साइबर अपराधों के प्रति विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा शिक्षणेतर सदस्यों में जागरूकता पैदा करना है, ताकि वे इस प्रकार के अपराधों से बच सकें। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा एवं डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि 50 से अधिक विद्यार्थियों ने निबंध प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर ममता पंवार व खुशी जोधा रही। द्वितीय स्थान पर पूजा चौधरी, साक्षी शर्मा, निरंजन राठौड़ व हंसा कंवर रही। तृतीय स्थान पर स्नेहा शर्मा, भावना चौधरी, स्मृति कुमारी, शुभा भोजक व हेमपुष्पा चौधरी रही।

महिलाओं के प्रति साइबर अपराध और सुरक्षात्मक उपायों पर कार्यशाला आयोजित

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में प्रत्येक माह के प्रथम बुधवार को साइबर अपराधों की रोकथाम हेतु जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की शृंखला में 2 फरवरी को ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 'महिलाओं के प्रति साइबर अपराध और सुरक्षात्मक मुद्दे' विषय पर राजकीय इंजीनियरिंग महाविद्यालय, आजमगढ़ के सहायक आचार्य तथा डीन एकेडमिक अशोक कुमार यादव ने अपने वक्तव्य में साइबर अपराधों की हो रही बढ़ोतरी और उनसे बचने के तरीकों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने साइबर स्टॉफिंग, मानहानि, ई-मेल स्पूफिंग, फिशिंग आदि माध्यमों से होने वाले साइबर अपराधों को रोकने के उपायों पर भी प्रकाश डाला।

कार्यशाला के प्रारंभ में संस्थान के उप-कुलसचिव विनीत सुराणा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और मुख्य वक्ता का परिचय करवाया। अध्यक्षीय उद्बोधन में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने साइबर अपराधों के बढ़ते प्रभाव की जानकारी देते हुए व्याख्यान को लाभदायक बताया। अंत में डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया। कार्यशाला में डॉ. आभा सिंह, डॉ. लिपि जैन, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, अजीत पाठक, प्रेयस सोनी आदि संकाय सदस्यों के साथ लगभग 70 विद्यार्थी जुड़े रहे।

''साइबर नैतिकता–एक डिजिटल जीवन शैली'' पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार आयोजित साइबर जागरूकता दिवस पर 2 मार्च को 'साइबर नैतिकता-एक डिजिटल जीवन शैली' विषयक वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी प्रो.आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए बताया कि वर्तमान समय में इस प्रकार की जागरूकता लाना सबका नैतिक दायित्व है। वर्तमान में साइबर अपराधों के प्रति विद्यार्थियों, शिक्षकों तथा शिक्षकेतर सदस्यों में जागरूकता पैदा की जानी आवश्यक है, ताकि वे इन अपराधों से बच सकें। प्रभारी प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि संस्थान में प्रत्येक माह के प्रथम बुधवार को साइबर जागरूकता दिवस का आयोजन किया जाता है, इससे लोग सचेत रहेंगे और साइबर क्राइम्स में कमी आ पाएगी। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा व डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि आयोजित इस प्रतियोगिता में रखे गए विषय के पक्ष में बी.एससी.-बी.एड. की छात्रा प्रियंका व बीए-बीएड की छात्रा सरिता मेघवाल तथा विपक्ष में बी.एससी. की छात्रा रुचिका के विचार सर्वश्रेष्ठ घोषित किये गए।

पोस्टर प्रतियोगिता में महक प्रथम और साक्षी द्वितीय रही

यूजीसी के निर्देशानुसार हर माह के प्रथम बुधवार को आयोजित किए जाने वाले साईबर सुरक्षा कार्यक्रमों की शृंखला में 6 अप्रेल को पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साइबर सुरक्षा थीम पर आयोजित इस पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर बीए चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा महक चौहान रही। द्वितीय स्थान पर बी.ए.-बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर की छात्रा साक्षी शर्मा रही। इस अवसर पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने साइबर सुरक्षा को काफी महत्त्वपूर्ण मानते हुए कहा कि निरन्तर बढ़ते जा रहे साइबर अपराधों से बचने और इस आपराधिक प्रवृत्ति पर रोकथाम के लिए जागरूक रहना बहुत ही जरूरी है। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि सामाजिक स्तर पर जागरूकता कायम करने और समाज में साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए लगातार विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन आवश्यक है। एनएसएस के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण के निर्देशन में आयोजित इस प्रतियोगिता का संचालन डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने किया।

पृथ्वी दिवस पर एनसीसी कैडेट्स छात्राओं ने रैली निकाल दिया जागरूकता का संदेश

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि पृथ्वी का दोहन सीमित रखने के लिए अपनी इच्छाओं को सीमित करना पड़ेगा। इसी से पृथ्वी को बचाया जाना संभव हो सकता है। वे 22 अप्रेल को अन्तर्राष्ट्रीय पृथ्वी दिवस पर विश्वविद्यालय की एनसीसी यूनिट की ओर से लेफ्टिनेंट आयुषी शर्मा के नेतृत्व में आयोजित कार्यक्रमों व जागरूकता रैली को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने विश्वभर में मची इच्छाओं की होड़ को पर्यावरण व धरा की सुरक्षा के लिए नियंत्रित करने की जरूरत बताई। घासीलाल शर्मा ने रैली के लिए छात्राओं को प्रोत्साहित किया। एनसीसी की जागरूकता रैली को विश्वविद्यालय के पीआरओ जगदीश यायावर ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। शहर के मुख्य मार्गों से पृथ्वी बचाने, प्लास्टिक के प्रयोग को सीमित करने, वृक्षों व हरियाली को बढ़ाने, आदि के नारे लगाते हुए विभिन्न ग्राफिक्स बनी तख्तियों को हाथों में लेकर आमजन को पृथ्वी दिवस का संदेश दिया। रैली के पश्चात् एनसीसी की कैडेट्स ने परिसर में श्रमदान करके स्वच्छता का संदेश भी दिया।

पुलवामा शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित

एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन ने 14 फरवरी को पुलवामा में शहीद हुए भारतीय सेना के जवानों का स्मृति दिवस मनाया। इस अवसर पर लेफ्टिनेंट आयुषी शर्मा ने कहा कि कुछ लोग 14 फरवरी को वेलंटाईन-डे के रूप में सेलिब्रेट करते हैं, लेकिन यह दिन इतिहास का अति दुःखद दिवस है, जब जम्मू-कश्मीर में 2019 को इसी दिन आतंकवादियों ने देश के सुरक्षाकर्मियों पर कायराना हमला किया था। कश्मीर के पुलवामा जिले में जैश-ए-मोहम्मद के आतंकी ने विस्फोटकों से लदे वाहन से जवानों की बस को टक्कर मारकर हमला किया, जिसमें सीआरपीएफ के 40 जवान शहीद हो गए थे। खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने कहा कि हमें इस दिन को कभी नहीं भूलना चाहिए। इस अवसर पर मौन रखकर शहीद हुए जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। कार्यक्रम में सभी एनसीसी कैडेट्स उपस्थित रहीं।

नियमितता, उत्साह तथा कर्त्तव्यनिष्ठा है सफलता की कुंजी - प्रो. त्रिपाठी

समूह गायन व एकल गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान में चल रहे एनएसएस की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर के पांचवें दिन 11 जनवरी को बौद्धिक सत्र में दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने जीवन में नियमितता, उत्साह तथा कर्त्तव्यनिष्ठा को जीवन में अपनाने का संदेश दिया। इससे पूर्व प्रथम सत्र में आयोजित गायन प्रतियोगिता कार्यक्रम में रखे गए एकल तथा समूह गायन कार्यक्रम में 5 समूहों ने तथा एकल गायन प्रतियोगिता में 13 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ. सरोज राय तथा डॉ. आभा सिंह ने प्रतियोगिता के अंत में प्रस्तुतीकरण को अधिक बेहतर बनाने के गुर सिखाए। कार्यक्रमों के आयोजन में राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह का विशेष योगदान रहा।

क्विज प्रतियोगिता का आयोजन

शिविर के छठे दिन 13 जनवरी को प्रथम सत्र में क्विज प्रतियोगिता कार्यक्रम में 6 समूहों ने भाग लिया। शिविर के दौरान ही कोविड-19 के बचाव के लिए स्थानीय राजकीय चिकित्सालय की टीम के सहयोग से वैक्सीनेशन कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें 15 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों का टीकाकरण करवाया गया।

इस सात दिवसीय विशेष शिविर का समापन 13 जनवरी को किया गया। कार्यक्रम के बौद्धिक सत्र के दौरान दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक तथा आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी समायोजन एवं सच्चरित्रता को अपनाकर अपना विकास करने और एक श्रेष्ठ नागरिक की भूमिका का निर्वाह करने की जरूरत बताई। प्रथम सत्र में स्वयंसेविकाओं व स्वयंसेवकों ने शिविर के सात दिनों के अपने अनुभवों को प्रस्तुत करते हुए अपनी सीखी हुई बातों को साझा किया व शिविर को लाभदायक बताया।

इस अवसर राष्ट्रीय सेवा योजना के इस सात दिवसीय विशेष शिविर में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों को इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर के नेतृत्व में पारितोषिक प्रदान किए गए।

अंतिम सत्र में भारत सरकार द्वारा आयोजित सूर्य नमस्कार के कार्यक्रमों के तहत संस्थान के खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी के नेतृत्व में सूर्य नमस्कार का अभ्यास भी करवाया गया। अंत में इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने सात दिवसीय कार्यक्रमों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। मंच का संचालन स्वयंसेविका नवनिधि दौलावत ने किया।

सामान्य योग क्रमाचार अभ्यास के लिए वेबीनार का आयोजन

केन्द्र सरकार के युवा और खेल मंत्रालय तथा राष्ट्रीय सेवा योजना के राज्य संपर्क अधिकारी के निर्देशानुसार सामान्य योग क्रमाचार अभ्यास (जनरल योगा प्रोटोकोल प्रेक्टिस) संबंधी जानकारी प्रदान करने के लिए संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग तथा राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 30 अप्रेल को ऑनलाइन वेबीनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में आयोजित इस वेबीनार में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने वैश्विक स्तर पर आयोजित होने वाले योग दिवस व प्रोटोकोल के बारे में जानकारी प्रदान की। इस संदर्भ में एक वीडियो के माध्यम से डॉ. शेखावत ने योग की विभिन्न मुद्राओं एवं योग की मूलभूत अवधारणाओं की जानकारी प्रदान की। अंत में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने किया। कार्यक्रम में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के सह-आचार्य डॉ. जुगल किशोर दाधीच, सभी संकाय सदस्य तथा विभिन्न विभागों के शोधार्थी व विद्यार्थी जुड़े रहे।

तृतीय राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव में स्मृति व सुनीता का चयन

भारत सरकार के युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित तृतीय राष्ट्रीय युवा संसद महोत्सव 2021-22 की संभाग स्तरीय प्रतियोगिता में संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दो स्वयंसेविकाओं स्मृति कुमारी व सुनीता चौधरी का चयन नागौर जिले से राज्यस्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि यह प्रतियोगिता देश भर में एक साथ आयोजित की गई थी। जोधपुर क्षेत्र में आयोजित प्रतियोगिता में नागौर जिले से राष्ट्रीय सेवा योजना तथा नेहरू युवा केंद्र संगठन के 382 युवाओं ने पंजीकरण करवाया था। इसमें प्रत्येक जिले से दो-दो प्रतिभागियों का चयन किया जाना था। नागौर जिले से चयनित दोनों ही प्रतिभागी जैन विश्वभारती संस्थान से हैं। प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका स्मृति कुमारी प्रथम तथा सुनीता चौधरी द्वितीय स्थान पर रही। प्रतियोगिता में स्मृति कुमारी ने 'अतुल्य भारत' तथा सुनीता चौधरी ने 'आयुष्मान भारत' विषय पर अपने विचार रखे। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के मार्गदर्शन में रूपरेखा तैयार की गई थी। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने दोनों स्वयंसेवी छात्राओं को इस सफलता पर बधाई देते हुए उनकी उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभाशंसा व्यक्त की।

स्वच्छता जागरूकता रैली व विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 25 फरवरी को द्वितीय एक दिवसीय विशेष शिविर गोद लिए गए गांव आसोटा तथा पदमपुरा में आयोजित किया गया। शिविर के प्रथम सत्र में स्वयं सेविकाओं ने दोनों गांवों में स्वच्छता-जागरूकता संबंधी रैली निकाली। द्वितीय चरण में दोनों इकाई की स्वयंसेविकाओं ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, पदमपुरा के प्राथमिक तथा उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया, जिसमें तीन समूह बनाकर नन्हे-मुन्ने बच्चों से पोस्टर बनवाए गए। तृतीय चरण में स्कूल के विद्यार्थियों के लिए स्वयंसेविकाओं द्वारा अलग-अलग समूह बनाकर म्यूजिकल चेयर, रस्सी-कूद, लंबी-दौड़ एवं अन्य विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। अंत में प्रतिभागी विद्यार्थियों में से प्रथम एवं द्वितीय स्थान पर रहने वाले विद्यार्थियों को पारितोषिक प्रदान किये गए।

इन कार्यक्रमों के संचालन में विद्यालय के स्टाफ का विशेष योगदान रहा। संपूर्ण कार्यक्रम इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न हुए।

एक दिवसीय शिविर में 'सामाजिक शिष्टाचार' पर व्याख्यान

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवसीय शिविर का आयोजन 5 फरवरी को किया गया। शिविर में बौद्धिक सत्र के दौरान सर्वप्रथम इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। उप कुलसचिव विनीत सुराणा ने 'सामाजिक शिष्टाचार' विषय पर अपने व्याख्यान में अपनी प्रतिष्ठा, सम्मान और स्तर में वृद्धि के लिए दिनचर्या में कुछ सकारात्मक बदलाव लाए जाने के टिप्स बताए। कार्यक्रम के दौरान बसंत पंचमी के पर्व के महत्त्व को उजागर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने की। अंत में इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में लगभग 83 स्वयं सेविकाएं एवं स्वयंसेवक उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय सेवा योजना के शिविर का आयोजन

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 11 मार्च को तृतीय एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के उद्घाटन सत्र में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने स्वयंसेवकों को अपनी क्षमता पहचानने और अपने सामर्थ्य में अभिवृद्धि करने का संदेश दिया।

बौद्धिक सत्र में वित्ताधिकारी आरके जैन ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि प्रत्येक विद्यार्थी को अपने लक्ष्य का निर्धारण करने और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए नियमित प्रयासरत रहना चाहिए। इस अवसर पर स्वयंसेविकाओं के प्रश्नों के जवाब देकर जिज्ञासाओं को शांत किया गया। तृतीय सत्र में स्वयंसेविकाओं ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित बुक-बैंक के संधारित फटी-पुरानी पुस्तकों को सुधारने का कार्य कर उन्हें वापस उपयोगी बनाया। कार्यक्रम का संयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने किया और अंत में इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने आभार ज्ञापित किया।

कहानी लेखन प्रतियोगिता

युवा कार्यक्रम और खेल मंत्रालय, भारत सरकार तथा राष्ट्रीय सेवा योजना, जयपुर के क्षेत्रीय निदेशक के निर्देशानुसार 'साइबर सुरक्षा कार्यक्रम' के तहत 4 मई को कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। डॉ. बलवीरसिंह चारण ने बताया कि प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर खुशी जोधा रही। द्वितीय राधिका चौहान और तृतीय स्थान पर हर्षिता पारीक व रविना बाजिया रही। संस्थान में साइबर सुरक्षा संबंधी आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की शृंखला में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में इस कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साइबर सुरक्षा के बारे में संस्थान के विद्यार्थियों ने कहानी के माध्यम से अपने विचारों को प्रस्तुत किया। प्रतियोगिता में कुल 26 प्रतिभागी छात्राओं ने भाग लिया। प्रतियोगिता राष्ट्रीय सेवा योजना के दोनों प्रभारियों डॉ. प्रगति भटनागर तथा डॉ. बलबीर सिंह और डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के मार्गदर्शन में संपन्न हुई।

एनएसएस की छात्राओं ने किया सूक्ष्म व्यायाम

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं ने 14 मई को यहां प्रार्थना सदन में सामुहिक रूप से योग की क्रियाएं की। योग प्रशिक्षिका डॉ. विनोद सियाग ने इस अवसर पर कहा कि अष्टांग योग के आसन व प्राणायाम दोनों महत्वपूर्ण अंग हैं। इनके अलावा अनेक सूक्ष्म यौगिक क्रियाएं भी हैं, जिन्हें किसी भी उम्र का कोई भी व्यक्ति कभी कर सकता है। इन्हें बैठे-बैठे भी किया जा सकता है। इनमें ललाट की क्रियाएं, आंखों की क्रियाएं, गर्दन की क्रियाएं, हाथों व पैरों, घुटनों आदि की क्रियाएं शामिल हैं। डॉ. सियाग ने सभी को एक साथ सूक्ष्म क्रियाओं का अभ्यास करवाया। यह कार्यक्रम विश्व योग दिवस की पूर्व तैयारियों के रूप में करवाया गया। कार्यक्रम में स्वयंसेविकाओं के अलावा प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवारी, डा. प्रगति भटनागर, अजयपाल सिंह भाटी, जगदीश यायावर, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, श्वेता खटेड़ आदि उपस्थित रहे।

तम्बाकू निषेध की शपथ ली और पोस्टर बनाए

विश्व तंबाकू निषेध दिवस के अवसर पर यहां संस्थान में तंबाकू एवं नशा मुक्ति निषेध संबंधी शपथ सामुहिक रूप से ली गई। 5 को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में यह शपथ ग्रहण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं ने तंबाकू निषेध जागरूकता के बारे में पोस्टर भी तैयार किए। कार्यक्रम संयोजक व राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि राज्य संपर्क अधिकारी तथा क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय सेवा योजना, राजस्थान के द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार तंबाकू नियंत्रण जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने संस्थान कार्मिकों एवं विद्यार्थियों को नशा एवं तंबाकू का सेवन न करने की शपथ दिलाई और बताया कि नशा जीवन का नाश है, इससे हमेशा दूर रहना चाहिए। इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

विश्व साईकिल दिवस पर साइकिल रैली का आयोजन

भारत सरकार के युवा मामले एवं खेल मंत्रालय तथा राष्ट्रीय सेवा योजना, जयपुर द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर 3 जून को संस्थान में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन व संरक्षण में एक साइकिल रैली का आयोजन किया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि पर्यावरण प्रदूषण को रोकने तथा स्वास्थ्य को दुरूस्त बनाने के लिए दैनिक जीवन में साईकिल के उपयोग को बढ़ावा देना काफी लाभदायक होता है। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर, इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह एवं एनसीसी एएनओ डॉ. आयुषी शर्मा भी उपस्थित रहे।

खो-खो एवं कबड्डी प्रतियोगिताओं का आयोजन

राष्ट्रीय युवा दिवस पर खेल प्रतियोगिता का आयोजन

संस्थान में 13 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष में इंडिया क्लब द्वारा मैत्री कबड्डी व खो-खो खेल का आयोजन किया गया। इसमें संस्थान के विभिन्न विभागों की टीमों ने भाग लिया। इस अवसर पर आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह, डॉ. आभा सिंह, डॉ. अमिता जैन, दिव्या माथुर, खेल प्रशिक्षक व निर्णायक अजय पाल सिंह भाटी आदि उपस्थित थे। इसमें खो-खो टीम विजेता उर्मिला(कप्तान), सुनीता, सरिता, मोनिका, अनिता मीनाक्षी, पूनम, भावना, ऊषा रही व कबड्डी टीम की विजेता सपना (कप्तान), सरोज, सुनीता, मीनाक्षी, नेनचा, सलोनी, पूजा, उषा, हंसा, सीमा, प्रमिला, विमला रही ।

खो-खो प्रतियोगिता की विजेता छात्राओं को प्रमाण-पत्रों का वितरण

पश्चिम क्षेत्रीय विश्वविद्यालय खो-खो खेलकूद प्रतियोगिता में सहभागिता हेतु विद्यार्थियों का चयन संस्थान में खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन कर किया गया। चयनित विद्यार्थियों ने वीर नरमाद दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत में आयोजित अन्तर्महाविद्यालय खो-खो प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इन प्रतिभागी विद्यार्थियों को 27 मई को संस्थान स्तर पर आयोजित कार्यक्रम में प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए। इस कार्यक्रम में खो-खो टीम के सभी खिलाड़ी कप्तान पूजा शर्मा, नूपुर सांखला, मोनिका सैनी, अनिता, मोनिका, पूजा लामरोड, उर्मिला ठोलिया, पूजा मेघवाल, सुनीता चौधरी, सरिता मंडा, पूजा मेघवाल, ऊषा आदि उपस्थित थे। इस प्रमाण-पत्र वितरण कार्यक्रम में खेल सचिव एवं अहिंसा व शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि खिलाड़ी के जीवन में खेलों का अति महत्व होता है। उसे लगातार प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते रहना चाहिए। डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलवीर सिंह चारण, डॉ. विकास शर्मा, खेल प्रशिक्षक अजयपालसिंह भाटी आदि भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

खेलों से मांसपेशियों के सुगठन के साथ प्रसन्नता व ताजगी आती है- कुलपति

संस्थान में 15 मार्च को खेल प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि शारीरिक गतिविधियों का महत्त्व शारीरिक विकास के साथ मानसिक, सांवेगिक, नैतिक, चारित्रिक विकास के आधार के रूप में भी है। खेलकूद गतिविधियों से अनुशासन, सक्रियता, ऊर्जा और ताकत का संवर्द्धन होता है, जिससे शरीर व मन के स्वस्थ रहने के साथ मांसपेशियों को सुगठित और मजबूत बनाने तथा चित्त में ताजगी और प्रसन्नता लाने में भी सक्षमता मिलती है। उन्होंने स्वयं बेडमिंटन खेलकर खेल-प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर प्रो. नलिन के. शास्त्री ने कहा कि खेलों से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ बुद्धिमत्ता का विकास भी संभव होता है। विद्यार्थी जीवन में खेल महत्त्वपूर्ण होते हैं। इस अवसर पर बेडमिण्टन, टेनिस, लम्बी दौड़, ऊंची दौड़, 100 मीटर दौड़ आदि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. बलवीर सिंह, डॉ. बी. प्रधान, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विनोद कस्वां, श्वेता खटेड़, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. सुनीता इंदौरिया, अजयपाल सिंह भाटी आदि उपस्थित रहे।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत कार्यक्रम

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन

संस्थान में 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के तहत आयोजित की जा रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का शुभारम्भ 14 फरवरी को एकल लोकनृत्य के साथ किया गया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने कहा कि प्रतियोगिताओं से विद्यार्थी अपने अंदर छिपी हुई प्रतिभा को उभार पाते हैं और उनका सर्वांगीण विकास संभव होता है। उन्होंने प्रतियोगिता के नियम बताए तथा विद्यार्थियों की हौसला अफजाई की। प्रगति चौरड़िया ने बताया कि भारत के विभिन्न प्रांतों की अलग-अलग संस्कृतियों में लोकगीतों व लोकनृत्यों का अपना स्थान है। राजस्थान में जनमानस में रचे-बसे गीतों व नृत्यों का आकर्षण सभी को लुभाता है और इनकी गूंज तो विदेशों तक में प्रख्यात हो चुकी है। कार्यक्रम में डॉ. पुष्पा मिश्रा व डॉ. अनुस्यूति जैन ने भी सम्बोधित किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पूजा इनाणियां, द्वितीय स्थान पर कल्पिता और तृतीय स्थान पर मोनिका जोशी रही। प्रतियोगिता में कुल 33 छात्राओं ने हिस्सा लिया। निर्णायक के रूप में डॉ. पुष्पा मिश्रा, प्रगति चौरड़िया व डॉ. अनुस्यूति जैन ने प्रस्तुति देने वाली छात्राओं की कला का मूल्यांकन किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. लिपि जैन व डॉ. आभासिंह ने निर्णायकों को पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका सम्मान किया।

सजीव हो गए राजस्थानी लोकगीत

प्रतियोगिता में छात्राओं ने राजस्थानी लोकगीतों पर नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियां देकर सबको मोहित कर दिया। ऐसा लगा जैसे राजस्थान की मरूधरा के लोकसंगीत को सजीव कर दिया गया है। कार्यक्रम में ऐश्वर्या सोनी ने राज्य के लोकप्रिय गीत 'घूमर घूमै रै....' पर नृत्य कर सबको आनन्दित किया। जयश्री वर्मा ने बाईसा रा बीरा, गोरबंद नखराळी आदि मिले-जुले गानों पर अपने नृत्य पर भावों को जीवित किया। रेखा कुमारी ने बांसुरिया पर गीत पेश किया। मंजू चौधरी ने 'बणज्या मोरनी....' गीत पर प्रस्तुति दी। मोनिका जोशी ने राजस्थान के मनभावन गीत 'थानैं काजळिया बणाल्यूं, थानैं नैणां में रमा ल्यूं, राज पलकां में बंद कर राखूं ली' पर चितलुभावन नृत्य की प्रस्तुति दी।

सरिता चौधरी ने 'मैं तो नाचबा नैं आईसा', प्रीति राजपुरोहित ने 'काळी कळावण उमड़ी', टीना कुमारी ने चिरमी, निशा जाट ने 'टूटे बाजबंद री लूम', रितू शेखावत ने 'बनके दिवानी ढोला मैं नाचूं', कौशल्या सैनी ने मिक्स गीतों, पूजा इनाणियां ने काळूयो कूद पड़्यो मेळा में' एवं ज्योति भोजक ने 'थानैं काजळियो बणाल्यूं' पर अपनी भाव-भंगिमाओं का प्रभाव बिखेरा। ममता पंवार, अनीश गौड़, आयुषी शर्मा, महक चौहान, खुशी जोधा आदि ने भी अलग-अलग गीतों पर नृत्य प्रस्तुत करके अपनी कला का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम का संचालन भावना चौधरी व ज्योति ने किया। अंत में डा. लिपि जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

एकल गीत प्रतियोगिता

संस्थान में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में 18 फरवरी को सेमिनार हाल में एकल गीत प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रथम स्थान पर नवनिधि दौलावत रही, द्वितीय अर्चना शर्मा तथा तृतीय स्थान पर रूखसाना व निशा स्वामी रही। नवनिधि दौलावत ने जब प्रतियोगिता में 'महामृत्युंजय मंत्र' पर अपनी गायन प्रस्तुति दी, तो सभी भावविभोर हो गए। कार्यक्रम में प्रतियोगी के रूप में 20 छात्राओं सुनीता चौधरी, सरिता मंडा, खुशी जोधा, हर्षिता यादव, मेघा वाधवानी, रूखसाना, अर्चना शर्मा, दिव्या पारीक, तानिया खान, टीना चिंडालिया, नवनिधि दौलावत, अभिलाषा शर्मा, हेमपुष्पा चौधरी, प्रमिला, सिमरान बानो, आकांक्षा शर्मा, पूनम, निशा स्वामी, मंजू चौधरी व अदिति अग्रवाल ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियां दीं।

प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा व श्वेता खटेड़ थे। कार्यक्रम का आयोजन सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन की अध्यक्षता में किया गया। प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. लिपि जैन, प्रगति चौरड़िया तथा छात्राएं उपस्थित रहीं। अंत में डॉ. लिपि जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शुभा

मातृभाषा थीम पर छात्राओं ने बनाए पोस्टर, दिव्या प्रथम रही

संस्थान में आयोजित की जा रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 21 फरवरी को पोस्टर पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दिव्या, द्वितीय स्मृति कुमारी तथा तृतीय स्थान पर निशा कंवर रही। कार्यक्रम में प्रतियोगी के रूप में 11 छात्राओं रेखा कुमारी, भावना चौधरी, स्मृति कुमारी, महिमा सोनी, दिव्या, राजू बिरदा, छाया शर्मा, निशा कंवर, नाज बानो, कौशल्या और मंजू चौधरी ने मातृभाषा थीम पर मनमोहक पोस्टर बनाये। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. बलवीर सिंह व खुशाल जांगिड़ थे। कार्यक्रम का आयोजन सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन की अध्यक्षता में किया गया।

सामूहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता

संस्थान में सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 26 फरवरी को सामूहिक लोकनृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने कहा कि प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास एवं कौशल विकास में सहायक उन्होंने प्रतियोगिता के परिणामों की घोषणा करते हुए बताया कि प्रथम स्थान पर नवनिधि एवं समूह रहा, द्वितीय पूजा चौधरी एवं समूह तथा तृतीय स्थान पर अरुणा एवं समूह रही। प्रतियोगिता के निर्णायक प्रमोद ओला एवं देशना चारण थे। कार्यक्रम में डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. लिपि जैन, डॉ. प्रगति भटनागर, प्रगति जैन, श्वेता खटेड, डॉ. सरोज राय, डॉ. आभा सिंह, खुशाल जांगिड़, डॉ. अजीत कुमार पाठक, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा और छात्राएं उपस्थित रहीं।

बेकार सामग्री से उपयोगी प्रोजेक्ट बनाने की प्रतियोगिता

संस्थान में आयोजित सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अन्तर्गत 12 मार्च को 'अनुपयोगी सामग्री का उपयोग' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने बताया कि इस प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुपयोगी वस्तु का उपयोग करके उनमें विभिन्न अल्ट्रेशन करके उनसे एक नवीन वस्तु निर्मित करने का विचार पैदा करने में सफल रहते हैं और इससे वे हर बेकार समझी जाने वाली वस्तु का फिर से उपयोग करना सीखते हैं। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर चित्रा व समूह एवं ज्योति व समूह रहे। द्वितीय स्थान पर मंजू चौधरी समूह एवं राजनंदिनी समूह तथा तृतीय स्थान पर प्रेक्षा समूह रहे। प्रतियोगिता में कुल 14 समूहों के 35 प्रतिभागियों ने अलग-अलग थीम पर मनमोहक वस्तुओं का निर्माण किया। प्रतियोगिता के निर्णायक प्रो. रेखा तिवारी एवं डॉ. आयुषी शर्मा रहे। कार्यक्रम में उपस्थित डॉ. विनोद कस्वां और डॉ. लिपि जैन ने छात्राओं के प्रयास की सराहना की।